जिज्ञासा-समाधान

प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचंद्र जी 'पुष्प'

✻ सम्पादक ✻

बा. ब्र. जयकुमार जैन 'निशांत' टीकमगढ़

✻ प्रकाशक ✻

श्री दिगंबर जैन युवक संघ

केंद्रीय कार्यालय : श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इन्दौर (म.प्र.)
फोन :- 0731-4003506, मो.: 6232967108

- कृति- **जिज्ञासा-समाधान**
- सम्पादक – **जयकुमार जैन 'निशांत', टीकमगढ़**
- प्रथम आवृत्ति – 2023
- संस्करण : 1000

उपलक्ष्य - पं. गुलाबचन्द्र जैन 'पुष्प', जन्म शताब्दी महोत्सव

प्रकाशक :**श्री दिगंबर जैन युवक संघ**
केंद्रीय कार्यालय : श्री दिगंबर जैन पंचबालयति मंदिर
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इन्दौर (म.प्र.)
फोन :- 4003506, मो.: 6232967108

प्राप्ति स्थान :

1) श्री दि. जैन पंचबालयति मंदिर
विद्यासागर नगर, बॉम्बेहॉस्पिटल के पास
ए.बी. रोड, इंदौर (म.प्र.) 0731-4003506, मो.: 8989505108

2) ब्र. जयकुमार 'निशान्त' प्रतिष्ठाचार्य
पं. गुलाबचंद्र जैन 'पुष्प' प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट
पुष्प भवन – टीकमगढ़ (म.प्र.) फोन : 07683-243138

3) गजेन्द्र ग्रंथमाला
2578, धर्मपुरा, दिल्ली-6,
मोबाईल : 098100-35356

4) अमर ग्रंथालय
श्री दि. जैन उदासीन आश्रम, एम.जी. रोड़, इन्दौर
मो. : 094254-78846

न्यौछावर राशि : 400/-

मुद्रक : **मोदी प्रिन्टर्स,** 76-बी पोलोग्राउण्ड इण्डस्टीयल इस्टेट,
पत्रिका प्रेस के पीछे, इंदौर (मो. 98260-16543)

*सर्वाधिकार सुरक्षित प्रकाशकाधीन

अनुक्रमाणिका

01.	पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' : व्यक्ति एक : रूप अनेक - अभिनन्दन साधंलीय, पत्रकार	06
02.	पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' सम्यक् समाधिमरण- ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर	13
03.	प्रतिष्ठित प्रतिष्ठाचार्य- श्री गुलाचन्द्र 'पुष्प' - नीरज जैन	14
04.	पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' द्वारा सम्पादित प्रमुख विधि-विधान एवं अनुष्ठान	22
05.	पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' द्वारा सम्पादित प्रमुख पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव	24
06.	पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' द्वारा सम्पादित प्रमुख गजरथ महोत्सव	26
07.	प्रमुख नूतन जिनालय जो पं. 'पुष्प' जी के प्रतिष्ठाचार्यत्व में पूज्य हुये	29
08.	पं. गुलाबचन्द 'पुष्प' द्वारा सम्पादित पञ्चकल्याणकों एवं विधाना कें अवसर पर सम्पन्न दीक्षा	31
09.	पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' द्वारा प्रतिष्ठा/विधि-विधान के शिक्षण/प्रशिक्षण शिविर	33
10.	'पुष्प' जी को सन्तों का सान्निध्य और शुभाशीष	34
01.	शंका समाधानः एक दृष्टि-पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प'	36
02.	चैत्यालय का वास्तु आधार-पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प'	38
03.	जिनबिम्ब का वास्तु आधार- ब्र. जय 'निशांत'	55
04.	वास्तुदोष परिहार और अनुष्ठान शुद्धि- साक्षात्कार आ. विद्यानन्द महाराज	67
05.	वास्तुः शंका-समाधान	76
06.	जिनबिम्ब दर्शन की मनोवैज्ञानिकता- माँ श्रीकौशल	93
07.	अभिषेक क्या और क्यों ? - ब्र. जय 'निशांत'	96
08.	गन्धोदक माहात्म्य- डॉ. श्रेयांसकुमार जैन	105
09.	जिनेन्द्रपूजा एवं पूजा के अंग- ब्र. जय 'निशांत'	108
10.	पूजनः शंका-समाधान	120
11.	सूतक पातक शास्त्रीय विश्लेषण- पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प'	139
12.	चर्याः शंका-समाधान	150
13.	णमोकार महामन्त्र एवं शुद्ध उच्चारण- कु. अर्चना जैन पम्मी	164

14. धूप एवं हवन, आगम की दृष्टि में - ब्र. जय 'निशांत' 169

15. महावीर निर्वाणोत्सव एवं दीपावली- पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' 177

16. विधिविधानः कुछ अनिवार्यताएँ , साक्षात्कार- आचार्य सन्मतिसागर महाराज 180

17. पूजा प्रतिष्ठा विसंगतियाँः निराकरण एवं दायित्व-
साक्षात्कार उपा. श्री ज्ञानसागर महाराज 183

18. पूजा अनुष्ठानः श्रावक की अनिवार्यता- साक्षात्कार आचार्य पद्मनन्दि महाराज 186

19. अनुष्ठानः शंका समाधान 192

20. जैन ध्वज और स्वस्तिक- ब्र. जय 'निशांत' 211

21. तीर्थंकरों की निर्वाणविधि पर उठते सवाल- ब्र. अशोक जैन 217

22. पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा एवं शंका समाधान 227

23. मांगलिक कार्यों में मुहूर्त- डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 245

24. जिनबिम्ब प्रतिष्ठा हेतु मैत्री विचार- डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 259

25. गृहप्रवेश एवं प्रतिष्ठान शुभारम्भ मुहूर्त- पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' 274

26. ज्योतिष : शंका-समधान 279

27. विदेशी संग्रहालय में महत्वपूर्ण प्रतिमाएँ-डॉ. ब्रजेन्द्रनाथ शर्मा 281

28. पार्श्वनाथ प्रतिमाएँ और धरणेन्द्र पद्मावती - पं. नीरज जैन 287

29. बुन्देलखण्ड के विद्वानों का जैनधर्म संवर्द्धन में योगदान- डॅ. न न्दलाल जैन 298

30. स्वतंत्रता आन्दोलन के परिपेक्ष्य में जैन विद्वान् - डॉ. ज्योति जैन 303

31. विविधाः शंका- समाधान 310

32. सन्दर्भ ग्रन्थ 324

मिला पिच्छि - आशीष

फरवरी १९८७, नैनागिर जी क्षेत्र में, आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में आयोजित गजरथ महोत्सव इतिहास की धरोहर है। १० फरवरी ८७ को प्रातः 'पुष्प' जी जब आचार्यश्री के दर्शन करने गये तो निर्देश मिला कि तपकल्याणक क्रिया के पश्चात् २ बजे मञ्च चाहिए, फरवरी के छोटे दिन, तपकल्याणक की समस्त क्रियायें यथा राज्यसभा, राज्याभिषेक , असि मसि कृषि, नीलांजना नृत्य, वैराग्य,लौकान्तिक देवों का स्तवन एवं विधि, दीक्षा विधिनायक प्रतिमा जी को देखते हुए 'पुष्प' जी ने कुछ समय बढ़ाने का निवेदन किया। आचार्यश्री बोले कहा ना २ बजे, आशीर्वाद लेकर 'पुष्प' जी मञ्च पर पहुँचे। सभी इन्द्र–इन्द्राणियों को ११ बजे तपकल्याणक की क्रियाओं हेतु आने का निर्देश देकर स्वयं व्यवस्था में संलग्न हो गये।

इतिहास साक्षी है उन क्षणों का, जब आचार्य श्री मञ्च पर पहुँचे तो सम्पूर्ण क्रियाविधि इस प्रकार सम्पादित की गई थी कि अनुष्ठान २ बजे सम्पन्न हो गया। तत्पश्चात् २३ वें तीर्थंकर भगवान् की समवसरण स्थली पर २३ दीक्षाओं की क्रिया आचार्यश्री के द्वारा सम्पादित की जाने लगी। आचार्यश्री द्वारा यह प्रथम आर्यिका दीक्षा समारोह था, सभी बहिनों में अत्यधिक उल्लास था, सभी का तन–मन–जीवन समर्पित था गुरु चरणों में, ११ आर्यिकाओं की दीक्षा के पश्चात् १२ क्षुल्लक दीक्षाएँ सम्पन्न हुई।

12 फरवरी को गजरथ परिक्रमा के पश्चात् जब आचार्यश्री मञ्च पर ससंघ विराजमान थे 'पुष्प' जी ने अपना सिर गुरुचरणों में रखा और अनायास गुरुदेव की पिच्छिका 'पुष्प' जी के मस्तक पर आशीष से अभिसिंचित करने लगी।

महामहोत्सव के प्रतिष्ठाचार्य को महामहोत्सव के प्रणेता गुरुवर का यह आशीष जन्मों-जन्मों तक गौरवान्वित करता रहेगा।

(श्रेयांस सांधेलीय, पाटन)

पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' : व्यक्ति एक : रूप अनेक

अभिनन्दन सांधेलीय, पत्रकार

सूत्रपात यशस्वी जीवन का

आज का विश्व जिन्हें पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' के नाम से जानता है, वह अब से ७८ वर्ष पहले तत्कालीन ओरछा रियासत के ककरवाहा गाँव में पं. मन्नूलाल जैन के घर में श्रीमती हरबाई की कोख से जन्में। नन्हें शिशु ने किलकारियाँ भरीं वह शुभ तिथि थी अषाढ़ सुदी अष्टमी संवत् १९८१ तदनुसार १९२४ ई. की जुलाई माह की दसवीं तारीख। गाँव की पाठशाला और अपने पिता श्री से प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करके साढूमल के श्री महावीर जैन विद्यालय में अध्ययन करके संस्कृत में मध्यमा एवं जैन विद्याओं में विशारद की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की।

सत्रह वर्ष की अवस्था में यौवन की देहरी पर दस्तक देते ही श्री गुलाबचन्द्र का पाणिग्रहण संस्कार निकटवर्ती ग्राम लार निवासी श्री भूरेलाल की बेटी आयुष्मती रामबाई के साथ हुआ। श्री गुलाबचन्द्र के पिता नामी वैद्य और प्रतिष्ठाचार्य थे। विरासत में अपने पैतृक गुणों का विकास इन्होंने किया। अपने माता–पिता की सुखद छाया में पनपा यह युगल आज भरे–पूरे और यशस्वी परिवार का अधिष्ठाता है।

पण्डित जी की वेश–भूषा उस समय सफेद खादी का कुर्ता, खादी की धोती और सिर पर गाँधी टोपी थी और आज भी उसी वेश–भूषा को अंगीकार किये हुए हैं। सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी का प्रभाव पण्डित जी की वेश–भूषा पर ही नहीं मन पर भी है। साधारण वेश–भूषाधारी पण्डित 'पुष्प' जी अनेक विद्याओं के अप्रतिम ज्ञाता हैं।

ज्ञान : लिया और दिया :

निष्ठा और निःस्पृहता के धनी, अपने युग के श्रेष्ठ प्रतिष्ठाचार्य पण्डित मन्नूलाल जी जैन के लाड़ले पुत्र गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' अपने पिताश्री से प्रेरणा प्राप्त कर प्रतिष्ठाचार्य बने और अपने पुत्र जयकुमार 'निशान्त' को कुशल एवं निष्णात प्रतिष्ठाचार्य बनाया। श्री जयनिशान्त ने एक कदम आगे

बढ़कर सन्तशिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार कर संयम पद पर चलने की राह पकड़ी इसी को कहते हैं– **बेटा बाप से सवाया।**

पण्डित जी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व की ओर दृष्टिपात करने पर हमें अनेक प्रेरणास्पद अनुभव मिले हैं। जब भी उनका सान्निध्य मिला, उनके ज्ञान के सागर से एक न एक मोती सीप से बाहर आकर मिला। उनके प्रेरणादायी सत्संग से मुझ जैसे अनेक जन लाभान्वित हुए हैं। उनका मनमोहक व्यक्तित्व ही ऐसा है जो उनसे जुड़ा, हमेशा जुड़ा ही रहा।

संयम और चरित्र के धनी :

संयम और चरित्र के धनी पं. जी ने कर्मठता और माँ जिनवाणी के प्रति समर्पण से जो कुछ अर्जित किया उसके फलस्वरूप आज साधु–संघों और श्रावकों में समान रूप से सम्मान पा रहे हैं। संयम पद पर बढ़कर दो प्रतिमा के व्रतों को अंगीकार कर अपने जीवन में त्याग और तपश्चरण के मार्ग को अपनाकर उन्होंने अपने आपको चरित्र के साँचे में ढाला भी है। भोजन के प्रति सदैव निःस्पृहता रही है। आप एक बार नीरस भोजन करते हैं, आप सादा भोजन और सादा जीवन के हिमायती हैं, गाँधीवादी जो ठहरे आप।

बुन्देलखण्ड केसरी :

पण्डित जी को 'बुन्देलखण्ड केसरी' कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। टीकमगढ़ जिले के एक छोटे ग्राम ककरवाहा जो आवागमन की सुविधाओं से आज भी अछूता है से अपनी जीवनयात्रा प्रारम्भ की। अपनी साधना, निष्ठा और ज्ञान से अच्छा ही करने का संकल्प लिया और आज आप भारतवर्ष के श्रेष्ठतम प्रतिष्ठाचार्य हैं। बुन्देलखण्ड के इस मानव ने पुरुषार्थ के बल पर अपनी अनूठी ऐसी छाप समूची जैन समाज पर छोड़ी है कि आज सभी आपका लोहा मानते हैं।

आगम के चतुर चितेरे :

माँ जिनवाणी की विवेचना करने जब आप शास्त्रजी की गद्दी पर विराजते हैं और आगम की विवेचना जिस कुशल शैली से करते हैं, उसको सुनकर एक अपूर्व अनुभव होता है। आगम के रहस्य को इसी बेबाक तरीके से श्रोताओं के सामने परोसते भी हैं और शास्त्र सभा उनकी स्पष्टवादिता से अभिभूत होती है। उनकी चुम्बकीय वाणी का जादू जब चलता है तब शंका–कुशंका अपने आप तिरोहित हो जाती हैं। सचमुच आप **'आगम के चतुर चितेरे'** जो ठहरे।

आगमनिष्ठ :

पण्डित जी का हर क्रियाकलाप 'आगमनिष्ठ' है। श्रावक के रूप में उनकी दिनचर्या प्रातः ४ बजे से प्रारम्भ हो जाती है। श्रावक की नैष्ठिक क्रियाओं में पूरी दक्षता रहती है। जिनालय के भीतर भी कुशल प्रशासक की भाँति आपकी उपस्थिति रहती है। जहाँ भी थोड़ी भी शिथिलता दिखी वहीं प्रेमपूर्वक दिये गये निर्देश को मानने सभी सहज ही तैयार हो जाते हैं। प्रतिष्ठाचार्य के रूप में आपकी

सम्पूर्ण क्रियाएँ आगम परम्परानुसार ही होती हैं। हर क्रियाएँ समय पर निष्पादित कराने में आपकी मिशाल नहीं है।

आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित गंजबासौदा, नैनागिरि, सागर, नरसिंहपुर आदि के पञ्चकल्याक/गजरथ समारोह में आचार्यश्री के कार्यक्रमों के लिये जिस समय मञ्च देने की बात निश्चिन्त हुई। उस समयावधि के पूर्व प्रतिष्ठा सम्बन्धी पूजन–अर्चन की क्रियाएँ सम्पन्न कराकर प्रतिष्ठा मञ्च आचार्यश्री को उपलब्ध करा दिया। समय–समय पर साधु संघ ने जो कहा पण्डित जी तत्काल उसकी पूर्ति कर देते बशर्ते वह आगम की परिधि के भीतर हो। इसीलिए पण्डित जी श्रेष्ठ अनुशासन पालक हैं।

पण्डित जी का हर कार्य समय सीमा में ही होता है चाहे परिस्थितियाँ अनुकूल हों या प्रतिकूल, सबके बीच से राह निकाल लेना कोई पण्डित जी से सीखे। यों तो पञ्चकल्याणक/गजरथ समारोहों में प्रत्येक क्रियायें समय पर सम्पन्न कराने में आपके मुकाबले में कोई मिशाल नहीं है। सिद्धक्षेत्र नैनागिरि (छतरपुर) में १९८७ में आयोजित गजरथ समारोह में आचार्यश्री विद्यासागर जी के विशाल चतुर्विध संघ एवं अपार जनमेदिनी के बीच शुभ मुहूर्त और लग्न में भगवान् की मोक्ष की क्रियाएँ सम्पन्न करायीं। आचार्यश्री के विशाल संघ और जनमेदिनी के कारण प्रतिष्ठा वेदी पर थोड़ी अव्यवस्था हो गई। व्यवस्था करने वालों की चूक से उपजी स्थिति पर पण्डित जी किंचित् विचलित हुए और फिर इस बुन्देलखण्ड केशरी ने अपनी ओजस्विता का जो रूप देखाया तत्काल अव्यवस्था–व्यवस्था में परिणत हो गयीं और समय पर सम्पूर्ण क्रियाएँ सहजता से सम्पन्न हो गईं।

श्रेष्ठ प्रतिष्ठाचार्य :

पण्डित 'पुष्प' जी "श्रेष्ठ प्रतिष्ठाचार्य" हैं। वैज्ञानिक सोच एवं आगम विहित शैली के माध्यम से आपने जो विधान एवं पञ्चकल्याणक कराये उसकी ख्याति समूचे देश में व्याप्त है इसीलिए तो आपको भगवान् महावीर स्वामी के प्रथम देशनास्थली राजगिरि में बने भगवान् महावीर के विशाल स्मारक जिनालय, सुहागनगरी फिरोजाबाद के प्रसिद्ध सेठ छिदामीलाल जी के मन्दिर में ४५ फुट ऊँची बाहुबली भगवान् की प्रतिमा सहित अनेक सुप्रसिद्ध स्थलों पर पञ्चकल्याणक कराने का गुरुतर भार सौंपा गया।

आंध्रप्रदेश की राजधानी हैदराबाद में आयोजित पञ्चकल्याणक के पुनीत अवसर पर आयोजित गजरथ फेरी को रथोत्सव में परिणत कर हैदराबाद के प्रमुख मार्गों से गजरथ भ्रमण कराकर जिनधर्म की महती प्रभावना कर मुस्लिम बहुल इस नगर में प्रशंसा अर्जित की। पण्डित जी लोकैषणा के दूर रहने वाले व्यक्तित्व के धनी भी हैं। श्री महावीर जी में आयोजित सहस्राब्दि समारोह के अवसर पर आयोजित पञ्चकल्याणक समारोह जो अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित था के प्रतिष्ठाचार्य पद का गुरुतर दायित्व सिर्फ इसीलिए नहीं स्वीकार किया कि उन्हीं दिवसों में देहली में एक पञ्चकल्याणक कराने हेतु पूर्वतः स्वीकृति दे दी थी।

आचार्यश्री : नैनागिरि : पण्डित जी :

08 फरवरी से 12 फरवरी १६८७ तक नैनागिरि जी मे आयोजित त्रयगजरथ समारोह तो आचार्यश्री–नैनागिरि–पण्डित जी त्रय की युति कहा जाना ही श्रेयस्कर है। २३वें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ स्वामी का समवसरण यहाँ आया था। सन्तशिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी मुनिराज अपने २३ पिच्छीधारी संघ के साथ पधारे और तपकल्याणक के दिन ही २३ साधकों की (११ आर्यिका एवं 12 क्षुल्लक) 10 फरवरी 1987 की दीक्षाएँ दी गई। 23 वें तीर्थंकर : 23 पिच्छीधारियों की उपस्थिति और 23 दीक्षाओं का संयोग अपने आप में अनूठा है।

गजरथ समारोह के अवसर पर पहली बार विशाल स्तर पर दीक्षाएँ अपने आप में एक कीर्तिमान थी। पण्डित जी के आचार्यत्व में आयोजित यह पहला समारोह था जहाँ पहलीबार आर्यिका दीक्षाएँ सम्पन्न हुईं। आर्यिका दीक्षाएँ और गजरथ समारोह का अनुपम दृश्य भी मनोहारी था। सन् १६६० में नरसिंहपुर म.प्र. में आयोजित गजरथ समारोह में भी ७ आर्यिका दीक्षाएँ हुईं। यहाँ भी पण्डित 'पुष्प' जी के आचार्यत्व में ही पञ्चकल्याणक/गजरथ आयोजित था और आचार्यश्री विद्यासागर अपने विशाल संघ के साथ उपस्थित थे।

नैनागिरि गजरथ समारोह भी अपने आप में मिशाल था। बुन्देलखण्ड का गजरथ समारोह और आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज की उपस्थिति मणिकांचन संयोग। सीमित स्थान पर असीमित समारोह जनमेदिनी का कोई पारावार नहीं। आयोजक हतप्रभ थे कैसे तर होंगे इनके प्यासे कण्ठ। इन्हीं दिनों चल रही थी लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय विभाग (पी.एच.ई.) की प्रान्तव्यापी हड़ताल। यही विभाग पेयजल उपलब्ध कराता है। पेयजल की विकराल समस्या के तारतम्य में आयोजकगण आचार्यश्री के पास पहुँचे और निवेदन किया गुरुवर– पेयजल की भारी समस्या है जो स्रोत ढूँढ़े गये थे उनमें नलकूप खनन के बाद भी पर्याप्त पानी नहीं है। तब गुरुवर ने मृदुहस्त के साथ कहा– 'चिन्ता न करो पार्श्वनाथ भगवान् के दरबार में सब ठीक होगा' सभी गुरुवर के आशीष से तृप्त हुए।

इस गजरथ समारोह में जप–अनुष्ठान की चर्चा चली तब पण्डित जी के सुझाव पर आचार्यश्री के संघस्थ साधुजनों, ब्रह्मचारी भाईयों और ब्रह्मचारी बहिनों ने यह दायित्व सम्भाला और अनुष्ठान में सहभागिता दी। उसी का परिणाम था कि समूचा आयोजन ऐतिहासिक आयोजन में परिणत हो गया।

पण्डित जी द्वारा प्रतिष्ठित यह पहला गजरथ/पञ्चकल्याणक था जिसमें विशाल संघ की उपस्थिति थी और उतनी ही विशाल दीक्षाएँ। आचार्यश्री और पण्डित जी के बीच में अभूतपूर्व सामञ्जस्य। सभी क्रियाएँ अपने नियत समय पर। इन्द्र और इन्द्राणी भी पण्डित जी के अनुशासन से बँधे ठीक समय पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराते गौरव का अनुभव करते।

गजरथ शिरोमणि :

बुन्देलखण्ड प्रान्त राजे–रजवाड़ों का प्रान्त रहा है। अनेक छोटी–बड़ी रियासतें रजवाड़े यहाँ रही हैं। समूचे बुन्देलखण्ड अञ्चल में जैनेतर समाज में भाद्रपद माह में श्री कृष्ण के विमानोत्सव आयोजित करने की परम्परा शुरू से रही है। यह विमानोत्सव भी धूम–धाम से होता है। जब–जब बुन्देलखण्ड में पञ्चकल्याणक हुए हैं तब–तब गजरथ पर श्री जी को विराजमान कर पञ्चकल्याणक पण्डाल की सात परिक्रमाएँ कराने की परम्परा जिनधर्म की प्रभावना करने की बात जैन समाज के कर्णधारों की रही है। राजा–रजवाड़ों के विमानोत्सव की बराबरी करना घर बैठे परेशानी मोल लेना थी।

पण्डित जी ने बुन्देलखण्ड की यह परम्परा बुन्देलखण्ड अञ्चल से निकालकर सुदूर मदनगंज–किशनगढ़ (राजस्थान), हैदराबाद (आंध्र प्रदेश), मुजफ्फरनगर, बहलना (मुजफ्फरनगर) ले गये और वहाँ भी गजरथ चलवाकर जिनधर्म की महती प्रभावना कर गजरथ की विशिष्ठता का भान जन–सामान्य को कराया इसीलिए उन्हें 'गजरथ शिरोमणि' कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा।

आतिथ्य प्रेमी :

पण्डित जी हमेशा सादा जीवन और उच्च विचार के मूर्तरूप हैं। जहाँ भी पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा या विधान कराने जाते हैं आपकी अपनी भोजनशाला चलती है। प्रतिष्ठाचार्य निवास सदैव आतिथ्य के लिये जाना जाता है। बाहर से आये विद्वानों, व्रती–साधकों के लिए प्रतिष्ठाचार्य निवास आतिथ्यगृह रहता है। जहाँ उन्हें समय पर शुद्ध भोजन और विद्वत् संगोष्ठी का लाभ भी सहज रूप में मिल जाता है। यह तो रही बाहर की बात। आपके अपने गृह निवास में तो यह व्यवस्था एक कदम आगे बढ़कर है। यह इनकी 'हृदय–विशालता' और आतिथ्य प्रेम का अनुपम उदाहरण है।

उदारदानी :

पण्डित जी सरल, सहृदय विद्वान् के साथ ही साथ दयालु और 'उदारमना दानी' भी हैं। अनेक तीर्थक्षेत्रों, संस्थाओं को यथेष्ट दान देते रहे हैं। मानव कल्याण और जीव कल्याण के लिए आचार्यश्री विद्यासागर जी मुनिराज के आशीर्वाद से निर्मित भाग्योदय तीर्थ सागर को एक लाख रूपयों का दान भी सहजता से दिया। घुवारा में तो प्रतिष्ठाचार्य के रूप में प्राप्त सम्मान निधि को परमपूज्य श्रद्धेय गणेशप्रसाद वर्णी जी की स्मृति में प्रारम्भ होने वाले महाविद्यालय के लिये उदारतापूर्वक दे समाज को अर्पित कर दी।

संगीतकार :

विधि–विधान पूर्वक प्रतिष्ठाओं और विधानों के दौरान पण्डित जी जब हारमोनियम बजाकर आध्यात्मिक भजन प्रस्तुत करते हैं तब समूचा पण्डाल मन्त्रमुग्ध हो जाता है। भारतीय संस्कृति में संगीत की स्वर लहरियों के माध्यम से जो भक्तिरस का प्रादुर्भाव हुआ है उसी को अपनाते हुए पण्डित जी भी कुशल 'संगीतकार' हैं। जब कभी पण्डित जी हारमोनियम पकड़कर बैठते हैं तब भक्ति गंगा में सभी अवगाहन करने लगते हैं।

कुशल आयुर्वेदाचार्य, ज्योतिषाचार्य :

पण्डित जी आयुर्वेद के ज्ञाता कुशल चिकित्सक भी हैं। अकलंक औषधालय के नाम से शुद्ध शास्त्रीय पद्धति से आयुर्वेद की दवायें निर्मित कर, उनके द्वारा रोगियों का सफल उपचार अपने पिताजी के स्वर्गवास के बाद करना प्रारम्भ किया। आप सिद्धहस्त वैद्य हैं। पीड़ितजनों को आपकी चिकित्सा से आराम मिला है। वैद्यक विद्या के साथ–साथ आपने ज्योतिष विद्या भी सीखी दोनों विद्या की युति से समाज में शारीरिक और मानसिक रोगों के पीड़ित जनों को आपने लाभ पहुँचाया। तन और मन की चिकित्सा करने वाले इस कर्मयोगी ने अपनी साधना से अनेकानेक जनों को पीड़ा–रहित किया है। पुष्प जी अपने चिकित्सीय व्यवसाय में कर्तव्यों का निष्पादन अत्यन्त निष्ठापूर्वक करते थे। उसका प्रमाण उस समय उनके द्वारा संधारित 'रोगी रजिस्टर' से प्राप्त होता है।

कुण्डलगिरि (कोनीजी) : पंडित जी :

मध्यप्रदेश में निर्मित इस प्रथम त्रिमूर्ति जिनमन्दिर का शिलान्यास १६ मार्च ८१ को पुष्यनक्षत्र के शुभ मुहूर्त में सम्पूर्ण शास्त्रोक्त विधि–विधान से पण्डित गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' ने सन्त शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में सानन्द सम्पन्न कराया।

कुण्डलगिरि (कोनीजी) में नन्दीश्वर द्वीप जिनालय और सहस्रकूट चैत्यालय अपनी बेजोड़ शिल्परचना, प्राचीनता और वैशिष्ट्य के लिए विख्यात हैं। ऐसे मनोहारी तीर्थ पर आकर पण्डित गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' के भाव भी संयम मार्ग में बढ़ने के हुए और उन्होंने यहाँ दो प्रतिमा के व्रत आचार्यश्री विद्यासागर जी से अंगीकार कर अपना मानव जीवन सफल किया।

संरक्षक/अधिष्ठाता :

तीर्थ सेवा के संस्कार विरासत में मिले। शिक्षा के सोपान बढ़ाने में आपकी विशेष रुचि रही है। संयम के पथ पर भी आप सचेष्ट हैं। अनेक संस्थाओं को आपसे मार्ग–दर्शन दिशा निर्देश सदैव सहजता से प्राप्त हो रहा है। उनेक संस्थाओं के आप मानद पदाधिकारी हैं।

अतिशय क्षेत्र नवागढ़ (ललितपुर, उ.प्र.), श्री दि. जैन आदिनाथ नया मन्दिर टीकमगढ़, व्रती आश्रम टीकमगढ़, अनेकान्त शिक्षण एवं स्वाध्याय केन्द्र टीकमगढ़ के आप जहाँ संरक्षक हैं वहीं आप श्री दि. सिद्धक्षेत्र अहार जी एवं शान्तिनाथ दि. जैन संस्कृत विद्यालय के अधिष्ठाता भी हैं।

संचालक/संयोजक :

पं. मन्नूलाल जैन प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट के संयोजक का भार सम्हालते हुए सामाजिक जन–चेतना की दिशा में कार्य करते रहे हैं। अकलंक औषधालय ककरवाहा के संचालक भी है।

कुलपति/सदस्य/ट्रस्टी :

शिक्षण प्रशिक्षण शिविर मुरैना के कुलपति के पद का गुरुतर भार सम्हाला और विद्यासागर विद्यानिधि ट्रस्ट सागर के ट्रस्टी बनकर छात्रों को उच्चशिक्षा के अवसर प्रदान कराते हुए विद्वत् परिषद् को अपनी महती सेवा देते हुए उसकी कार्यकारणी में समाहित हैं।

अनुशासित दिनचर्या :

१. पं. पुष्प जी की दिनचर्या नियमित एवं व्यवस्थित है, विपरीत परिस्थितियों में भी वह इसका अनुपालन करते हैं। यह इनकी चर्या में समाहित है। १३–१४ अगस्त १९९९ को द्रोणगिरि में दो दिवसीय "बुन्देलखण्ड के जैन तीर्थ उनकी वास्तुकला एवं वास्तु विद्या" विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन था। १४ अगस्त को प्रातः ४ बजे पण्डित जी सा. उठ गये और सामायिक पर बैठ गये। इसी बीच बिजली चली गई। सामायिक के बाद पण्डित जी सा. ने अपनी टार्च निकाली 'धर्म ध्यान दीपक' पुस्तक निकालकर नित्य पढ़े जाने वाले स्तोत्रों का पाठ टार्च की रोशनी में ही प्रारम्भ हो गया। मैं यह देखकर दंग रह गया। समय के एक–एक पल की कीमत किस तरह करते हैं पण्डित जी। परिस्थिति कैसी भी हो परन्तु अपनी नित्य क्रियाओं के प्रति हरपल सचेष्ट।

२. विषम परिस्थितियों में भी पण्डित जी प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदल देते हैं। मेरी तनया कु. चन्दन सांधेलीय नेशनल हॉस्पिटल जबलपुर में मस्तिष्क ज्वर से पीड़ित हो अपने जीवन से संघर्ष कर रही थी। पण्डित जी सा. को विदित हुआ, वे उसे देखने आये। हालचाल जाने इसी बीच दिन अस्त हो गया। समय की नजाकत को देखते हुये पण्डित जी साहब वहीं हॉस्पिटल में अपनी सामायिक को एक बैंच पर ही बैठ गये। परिस्थितियाँ चाहे जैसी हों पर श्रावक के षट् आवश्यक कार्यों में कभी कोई कमी नहीं, शिथिलता नहीं। धन्य हैं आपकी निष्ठा और चर्या।

प्रतिदिन प्रातः ४.३० बजे- जागना- पञ्च नमस्कार मन्त्र, सुप्रभात स्तोत्र, सहस्रनाम स्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, भक्तामर, महावीराष्टक, अद्याष्टक, परमानन्द स्तोत्र, वीतराग स्तोत्र, प्राकृत निर्वाणकाण्ड, सिद्धभक्ति, सामायिक पाठ, समाधिमरण पाठ, बारह भावना, वैराग्यभावना, द्वात्रिंशतिका, शान्तिभक्ति, आदि के पाठ के उपरान्त प्रतिक्रमण विधिपूर्वक सामायिक, तत्पश्चात् स्वाध्याय।

प्रातः ८ बजे- दैनिक नित्यक्रियाओं के पश्चात् जिनालय में देवदर्शन, पूजन, स्वाध्याय आदि।

पूर्वाह्न ११ बजे- भोजन, विश्राम, समागत पत्रों के उत्तर, शंकाओं का समाधान लिखकर प्रेषित करना, बाहर से आने वालों का समागम एवं आवश्यक चर्चाएँ।

सूर्यास्त पूर्व- जल ग्रहण करके सामायिक के पश्चात् भक्तामर, महावीराष्टक, वैराग्यभावना, बारह भावना, आलोचना पाठ, सामायिक पाठ एवं समाधिमरण आदि का पाठ करना

संध्या- अनेकान्त शिक्षण एवं स्वाध्याय केन्द्र आदिनाथ दि. जैन नया मन्दिर जी में स्वाध्याय कराना।

रात्रि १० बजे- विश्राम

अष्टमी एवं चतुर्दशी के दिन- प्रातः ३.३० जागरण। पूर्वोक्त पाठ के साथ वृहद् स्वयंभूस्तोत्र, कल्याणमन्दिर–एकीभाव–विषापहार–स्तोत्र, जिनचतुर्विंशतिका स्तोत्र, कल्याणलोचना एवं श्रावक प्रतिक्रमण आदि पाठ।

विशेष- सन् १९९३ में अमरकण्टक क्षेत्र प्रवास में आचार्य १०८ श्री विद्यासागर जी महाराज से एक बार भोजन एवं शाम को पेय पदार्थ लेने का नियम अनवरत।

दो प्रतिमा के व्रत- सन् १९८१ में आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कुण्डलगिरि कोनी जी, पाटन (जबलपुर) में १६ मार्च १९८१ को ग्रहण किये।

दिनचर्या प्रेरणा- पं. शीलचन्द्र जी न्यायतीर्थ साढूमल एवं पं. प्रभुदयाल जी शास्त्री, साढूमल

नियम प्रेरणा- पिताश्री मन्नूलाल जी से

आजीवन त्याग- टमाटर, पपीता, ऊनी वस्त्र, विदेशगमन।

पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प सम्यक् समाधिमरण

ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर

प्रतिष्ठा पितामह पंडित श्री गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' टीकमगढ़ जिन्होंने अपने जीवन को स्वाध्याय धर्माचरण आगमनिष्ठ चर्या से अलंकृत कर निरंतर सतर्क रहते थे। समय-समय पर चर्या में लगें दोषों की आलोचना आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के दर्शन कर प्रायश्चित लेते थे।

आचार्य श्री प्रत्येक निर्देष संकल्प रूप से पालन करते थे। प्रमाद एवं आलस्य के साथ शरीर की जीर्णता उन्हें कभी स्खलित नही कर सकी।

पंडित जी ने अंतिम समय समाधि हेतु ग्रह त्याग कर पंचबालयति मंदिर इंदौर में रहने का विचार कर वही रहकर प्रतिदिन तीनों टाईम स्वाध्याय कराकर आश्रम में रहने वाले ब्रह्मचारियों भाईयों एवं समाजजन को लाभान्वित कराते रहते थे।

13 दिसम्बर 2014 को पंडित जी के साथ हम भी गये आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के दर्शन करने के लिये श्री सिद्धक्षेत्र नेमावर गये। आचार्य श्री से चर्चा हुई तथा उन्होंने विगत काल में चर्या में लगे दोषों का प्रायश्चित लिया। तथा समाधि की भावना व्यक्त की।

आचार्य श्री ने साईड की स्थिति को देखते हुये आवश्यक निर्देष दिये। इस अवस्था में शरीर चोटील नहीं होना चाहिये। फिसलने गिरने की स्थिति ना बने। वृद्ध अवस्था में शरीर अत्यंत शिथिर हो जाता है। हड्डियाँ कमजोर हो जाती है। इसलिये चलने फिरने में इसका विशेष ध्यान रखें। तथा आचार्य श्री ने अष्टमी एवं चतुर्दशी को उपवास करने नियम देकर समाधि साधना का आशीर्वाद प्रदान किया।

आपने आचार्य श्री के निर्देषों का जीवन के अंतिम क्षणों तक पालन किया प्रत्येक चर्या को सजकता पूर्वक सम्पन्न करते हुये सदैव गुरु निर्देषों का स्मरण रखा यहाँ तक कि 3 व 4 जनवरी को दो अष्टमी पढ़ने पर आपने दोनों दिन का उपवास किया। 5 जनवरी 2015 को दो उपवास होने के बावजूद आपने अभिषेक करते हुये प्रातः कालीन स्वाध्याय कराया। भोजन उपरान्त सामायिक के पश्चात 3 बजे से 4.10 मिनिट पर स्वाध्याय एवं अनेक श्रावक - श्राविकाओं, ब्र. भैया-बहनों का शंका समाधान किया। संध्याकाल का जलग्रहण करके कायोत्सर्ग के बाद देह विर्सजन का आभाष हुआ आपने तुरंत वस्त्र त्याग करने का संकेत दिया। तथा कायोत्सर्ग करते-करते प्रयाण कर गये।

इस प्रकार जीवन का निस्पृह आचरण एवं गुरु कृपाशीष से सुफल था जो बिना पीड़ा वेदना या आकुलता के देह विसर्जन करके 'पुष्प' जी ने अपनी मानव पर्याय को सार्थक किया है।

प्रतिष्ठित प्रतिष्ठाचार्य - श्री गुलाबचन्द्र 'पुष्प'

नीरज जैन

बीसवीं शताब्दी के दिगम्बर जैन प्रतिष्ठाचार्यों की तालिका में संहितासूरि, प्रतिष्ठा दिवाकर, स्वनामधन्य पण्डित श्री गुलाबचन्द्रजी 'पुष्प' का नाम वर्तमान में तो अग्रगण्य है ही, भविष्य में भी वह सदा बहुत ऊपर ही लिखा मिलेगा प्रायः निराडम्बर, पूर्णतः शास्त्रोक्त और प्रभावनापूर्ण प्रतिष्ठाएँ निष्पन्न कराना उनकी अपनी विशेषता है, जिसके लिये वे पच्चीस–तीस साल से देश में विख्यात हैं।

पुष्प जी के व्यक्तित्व की चमक बढ़ाने और उनकी क़ीर्ति प्रसारित करने में उनकी अपनी साधना तो कारण है ही, परन्तु एक और बड़ा सशक्त कारण यह है कि वे निष्ठावान प्रतिष्ठाचार्यों की अपनी ही तीन पीढ़ियों की माला के मध्य में एक आभावान मणि की तरह गंसे हुए हैं। उनके पूज्य पिता पण्डित मन्नूलाल जी अपने समय के माने हुए प्रतिष्ठाचार्य थे और अपनी विनम्रता तथा निःस्पृहता के लिये विशेष रूप से जाने जाते थे। पुष्प जी स्वयं तो अपनी सारी विशेषताओं के साथ हमारे सामने हैं ही, और उनके होनहार सुपुत्र पण्डित जय 'निशान्त' भी आजन्म ब्रह्मचर्य का संकल्प लिये, अपने पिता के अनुशासन में प्रतिष्ठा कार्यों के साथ प्रतिबद्ध, थोड़े ही समय में एक निष्णात प्रतिष्ठाचार्य के रूप में, सारे देश में ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। प्रतिष्ठा के क्षेत्र में ऐसा तीन पीढ़ियों का अक्षुण्ण योगदान किसी भी प्रतिष्ठाचार्य के लिये बड़ा दुर्लभ संयोग है। पुष्पजी सचमुच भाग्यशाली हैं कि यह उत्तम संयोग उनके अवदान का प्रभा–मण्डल बन कर इतिहास में उनकी कीर्ति को प्रसारित कर रहा है उनके पूरे परिवार को और परिकर को भी इस विलक्षण उपलब्धि पर गौरव की अनुभूति होना चाहिये।

संघर्षमय जीवनः एक वरदान -

पुष्पजी एक बड़े विद्वान् के बेटे होकर भी बड़े बाप के बेटे नहीं हैं शायद यह उनका सौभाग्य रहा। यहाँ मैं अपने अनुभव की बात लिखना चाहता हूँ कि विपन्नता के वरदान के बिना मनुष्य कभी अभावों के आनन्द का स्वाद नहीं ले पाता। एक बार भी अभावों की गोद में सिर छुपाकर जो सो चुका हो वही गरीबी की गरिमा को समझ सकता है और उसका मूल्यांकन कर सकता है। मेरी तरह पुष्पजी ने भी शैशव से लेकर युवावस्था के प्रारम्भ तक वे सारे अभावजनित आनन्द भोगे हैं जो मानव–जीवन के परिष्कार में ऐसे सहायक होते हैं जैसे स्वर्ण–पाषाण को सौ टंच का सोना बनने की प्रक्रिया में भट्टी की तपन और घन की चोट सहायक होती है। यह सब अपने वर्तमान में सुहावना नहीं लगता पर मनुष्य हो

या स्वर्ण, दोनों का भविष्य उस तपन से ही संवरता है। पुष्पजी के जीवन को संवारने में अनुकूल परिस्थितियों का उतना सहयोग नहीं रहा जितना विपत्तियों और प्रतिकूल परिस्थितियों का योगदान रहा है।

बुन्देलखण्ड की धरती हीरों की ऐसी खदान है जो केवल जड़ पार्थिव रत्न ही उत्पन्न नहीं करती वरन् चेतन हीरे और मणि–माणिक्य भी उस धरती पर विपुलता से उत्पन्न होते रहे हैं। ऐसे ही एक बुन्देली माणिक के कृतित्व को नमन करने के लिये इस ग्रन्थ की योजना कुछ मित्रों ने की हैं। बुन्देली श्रावक में अपना एक विशेष प्रकार का स्वाभिमान, एक अलग प्रकार का कैरेक्टर पाया जाता है, जो अन्यत्र प्रायः देखने में नहीं आता। वह विपत्तियों का सामना करने के लिये बड़ा ही धीर–वीर होता है परन्तु पाप–कार्यों से और पाप के फल से वह सदा भयभीत भी रहता है। नम्रता में उसे प्रसून–मृदुल कहा जा सकता है पर अपने सिद्धान्त की दृढ़ता के लिये वज्रादपि कठोर बनते उसे एक पल भी नहीं लगता। इस बुन्देली विशेषता का कोई जीता–जागता उदाहरण देखना हो तो गुलाबचन्द्र 'पुष्प' का चित्र सामने रख लेना पर्याप्त होगा।

विद्या और अनुभव के समन्वय से ही विद्वान् का व्यक्तित्व निर्मित होता है। इस निकष पर जब हम पुष्पजी को परखते हैं तो इन दोनों में उनका स्वामित्व या अधिकार हमें स्थापित मिलता है। यह कहना कठिन लगता है कि उनके पास विद्या से अधिक अनुभव है या अनुभव से अधिक विद्या है। लगता है जैसे दोनों एक दूसरे के पूरक बनकर उनके गुरु–गम्भीर व्यक्तित्व को संवार रहे हैं। विद्या के बारे में धवल–ग्रन्थों के टीकाकार पूज्य वीरसेन स्वामी ने एक श्लोक हमें प्रदान किया है जिसका तात्पर्य यह है कि –'आचार्य या गुरु अपने शिष्य को ज्ञान का पहला एक चरण ही दे सकते हैं। उसका दूसरा चरण शिष्य स्वयं अपनी बुद्धि के बल पर अभ्यास करके पाता है। विद्वानों की संगति या गुरु की सेवा करके तीसरा चरण उसे प्राप्त होता है, परन्तु ज्ञान का चौथा चरण, विद्या का पूरक भाग, केवल विद्यार्थी का आयुवृद्धि के साथ, अनुभव के माध्यम से ही उपलब्ध हो सकता है। विद्यार्जन के शिखर तक पहुँचने की यह राह है इसका कोई संक्षिप्त मार्ग, कोई 'शार्टकट' नहीं है। वह अनुष्टुप् हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं–

आचार्यः पदमाचष्टे पादः शिष्यः स्वमेधया,
तद्विज्ञसेवया पादः पादः कालेन पच्यते।।

आचार्य–प्रवर श्री वीरसेनस्वामी के इस कथन के आलोक में देखें तो पुष्पजी ने इन चारों उपायों को हस्तगत करके विद्या का समग्र अर्जन किया है। आगम, परम्परा और कर्मकाण्ड की बारीकियों पर उन्हें असाधारण अधिकार प्राप्त है। यह उनकी ऐसी कालजयी सम्पत्ति है जो बाँटने से बढ़ती है और जिसके छिन जाने का कोई भय नहीं है। पहला चरण उन्हें जिस गुरु से प्राप्त हुआ वे उनके पिता ही थे। दूसरा चरण प्राप्त करने में उनकी लगन

और उनका अथक परिश्रम सहयोगी रहा। तीसरे चरण की पूर्ति के लिये पुष्पजी ने अत्यन्त विनम्रता–पूर्वक जीवन भर वरिष्ठ ज्ञानियों और अनुभवी विद्वानों से सीखने का प्रयत्न किया। इस मायने में वे आज भी अपने को विद्यार्थी ही मानते हैं। संत–समागम पुष्पजी का प्रिय अनुष्ठान रहा है। इस विशाल देश के हर कोने तक उन्हें पहुँचने का अवसर मिला है और समय के हर सन्त से उन्होंने कुछ न कुछ पाया है।

बीसवीं शताब्दी के अप्रतिम ज्ञानाराधक महात्मा पूज्यश्री गणेशप्रसादजी वर्णी के चरणों में पुष्पजी की आन्तरिक श्रद्धा और उत्कट भक्ति रही है। अभिप्राय की निर्मलता, वाणी की मिठास और अहंकार–हीनता वर्णीजी से ही उन्हें मिली है। दिगम्बराचार्यों में सर्वश्री पूज्य आचार्य शिवसागरजी, आचार्य विमलसागरजी, आचार्य विद्यासागरजी, आचार्य विद्यानन्दजी, आचार्य विरागसागरजी, आचार्य देवनन्दीजी एवं आचार्य भरतसागरजी, मुनिश्री आर्यनन्दीजी, मुनिश्री क्षमासागरजी तथा आर्यिका सुपार्श्वमती माताजी, ज्ञानमती माताजी और विशुद्धमती माताजी सहित अनेक आचार्य भगवन्तों, मुनिराजों और आर्यिका माताओं के सत्परामर्श और मंगल आशीर्वाद पुष्पजी पर सदा बरसते रहे हैं।

विद्वानों के प्रति आदरभाव और वात्सल्य पुष्पजी के व्यवहार की विशेषता है। वे स्वयं व्रती हैं इसलिये जहां भी प्रतिष्ठा आदि कराने जाते हैं, अपनी भोजन व्यवस्था के लिये पूरा चौका उनके साथ पुष्प–भवन से ही साथ चलता है। फिर वहाँ कोई वरिष्ठ विद्वान, व्रती या शुद्ध भोजन का नियमधारी यदि पहुँच जाये तो संकेत मिलते ही पुष्पजी के चौके में उसकी व्यवस्था हो जाती है। ऐसा वात्सल्य विरले ही प्रतिष्ठाचार्य निभा पाते हैं। अपने समय के प्रायः सभी विद्वानों के साथ उनका सम्पर्क रहता था और रहता है। इनमें सर्वश्री पण्डित गोविन्दरायजी, हीरालालजी सिद्धान्तशास्त्री, परमानन्दजी शास्त्री, बालचन्दजी सिद्धान्तशास्त्री, डॉ. पन्नालालजी साहित्याचार्य, डॉ. दरबारीलालजी कोठिया, प्रतिष्ठाचार्य पं. नाथूलालजी शास्त्री, जगन्मोहनलालजी शास्त्री आदि के नाम प्रमुखता से गिनाये जा सकते हैं। वैसे यह तालिका बहुत बड़ी बन सकती है। इस प्रकार 'तद्विज्ञसेवया पादः' का चरण पूरा करके पुष्पजी ने अपने ज्ञान को प्रौढ़ता प्रदान की है।

विद्यार्जन का चतुर्थ चरण है 'कालेन पच्यते', इसकी सुदीर्घ और फलवती साधना पुष्पजी ने साहस और धीरज के साथ सम्पन्न की है। सतत्तर साल की आयु में सवा सौ से अधिक पञ्चकल्याणक महापूजाएँ करा चुके पुष्प जी ने अन्य जो वेदी प्रतिष्ठाएँ, विधान, शिलान्यास तथा विशेष पूजा आदि अनुष्ठान कराये हैं। उनकी तो गिनती भी सम्भव नहीं हैं। इन आयोजनों के लिये उन्हें देश के चारों खूंट नापना पड़े और समाज में हर वर्ग के व्यक्ति से मिलने–जुलने का अवसर मिला। पुष्पजी की ये यात्राएँ 'पुष्प–वीथिकाएँ' नहीं थीं। कई बार इस पथ की विषमताओं ने भी उन्हें बहुत कुछ सिखाया है। इनमें कष्ट भी हुए हैं, कभी फल–मेवा के सहारे दिन काटने पड़े और कभी उपवास करके भी मुस्कराना पड़ा है। अनेक स्थानों पर

अपने सिद्धान्तों को बेचने की पेशकश भी उनके सामने आई, पर ऐसे अवसरों पर पुष्पजी ने आगम और परम्पराओं की रक्षा को प्राथमिकता देकर दृढ़ता–पूर्वक अपनी राह बनाई है। लोग बुरा मान गये तो मान गये। उन्होंने हठाग्रही और अभिमानी कह लिया तो उसके प्रति कनबहरी दे ली। लोग अड़ गये तो पुष्पजी अनुष्ठान का सर्वोच्च पद त्यागकर शान्त भाव से घर लौट आये पर **इस बुन्देले पण्डित** ने कभी अपनी आन नहीं छोड़ी और अपने सिद्धान्तों से समझौता करना पसन्द नहीं किया। इन सारी परिस्थितियों ने पुष्पजी के ज्ञान को अनुभव की चासनी में पाग कर वह व्यंजन तैयार किया है जिसे वीरसेनस्वामी ने 'पादः कालेन पच्यते' कहा होगा। यह पुष्पजी के व्यक्तित्व के निर्माण–समारम्भ की वह झांकी है जिसमें उनके समग्र को पहचानने का प्रयास किया जा सकता है।

प्रतिष्ठाचार्य पद की अर्हता -

विद्वांन् और प्रतिष्ठाचार्य जनमते नहीं, बनते हैं और उस बनने की प्रक्रिया में बड़ा आत्म–अनुशासन पालने की आवश्यकता होती है। वही एक साधना है जहाँ साधक को उसके पथ से डिगाने के लिये लाभ, लालच और कीर्ति की अप्सरायें पग–पग पर अपना जाल बिछाती मिलती हैं। क्यों न हो, धार्मिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा कर्म एक ऐसा बाजार है जहाँ निष्ठा को बहुत मँहगे दामों, लगभग मुँहमाँगे दामों पर बेचने की सुविधा है ऐसे सारे प्रलोभन जीतते हुए अपनी निष्ठा को बेदाग बचा सके वही प्रतिष्ठाचार्य अपनी उस महिमामय पदवी के साथ न्याय करता है। पवित्र और मर्यादित जीवन जीने वाला श्रद्धालु श्रावक जब अपने आपको अनेक प्रकार की शास्त्राज्ञाओं में बाँध कर साधना करता है। तब उसकी वाणी में और क्रियाओं में पाषाण को भगवान् बनाने की सामर्थ्य उत्पन्न होती है। इसलिये सद् श्रावक पुरुष में ही प्रतिष्ठाचार्य बनने की पात्रता सम्भव हो सकती है। जिसमें श्रावक के गुण ही व्यक्त न हुए हों वह व्यक्ति यदि इस मार्ग पर आयेगा तो उसके द्वारा इस पद की कीर्ति फैलने के स्थान पर यह पद–लांछित होने तथा आगम–परम्पराओं के लोप की ही अधिक आशंकाएँ हो सकती हैं।

प्रतिष्ठाचार्य का लक्षण -

हमने यह आकलन कर लिया कि सद्श्रावक ही प्रतिष्ठा कर्म कराने की पात्रता अर्जित कर सकता है। अब जब हम यह जानने का प्रयास करते हैं कि प्रतिष्ठा–शास्त्रों में प्रतिष्ठाचार्य का क्या लक्षण निर्धारित किया गया है तब हमें ज्ञात होता है कि प्रतिष्ठा के विधि–विधान सीख लेना भले ही सरल हो परन्तु शास्त्रोक्त प्रतिष्ठाचार्य बन जाना आसान काम नहीं है। जिसका व्यक्तित्व अनेक गुणों से सजा–संवरा होगा वही अपने आपको प्रभावक प्रतिष्ठाचार्य के रूप में स्थापित कर सकता है। उसमें जिन गुणों की अपेक्षा की गई है उनमें से कुछ गुण तो ऐसे हैं। जिन्हें मात्र पारम्परिक धरोहर के रूप में ही प्राप्त किया जा सकता है। उनका उपार्जन नहीं कया जा सकता, पर अधिकांश गुण ऐसे हैं जिन्हें प्रयत्नपूर्वक प्राप्त किया

जा सकता है। उन सारे गुणों से अपने व्यक्तित्व को मण्डित करना और बराबर किये रखना किसी साधना से कम नहीं है। यह साधना प्रतिष्ठाचार्य को आजीवन करनी पड़ती है। या उसे करना चाहिये। स्वयं पुष्पजी ने प्रतिष्ठाचार्य के शास्त्रोक्त लक्षण बताने वाला यह श्लोक अपने ग्रन्थ में उद्धृत किया है–

स्याद्वादधुर्योऽक्षरवेत्ता निरालसो रोगविहीनदेहः,
प्रायः प्रकर्ता दमदानशीलो जितेन्द्रियो देवगुरुप्रमाणः।
शास्त्रार्थसम्पत्ति-विदीर्णवादो धर्मोपदेश-प्रणयः क्षमावान्,
राजादिमान्यो नययोगभाजी तपोव्रतानुष्ठित-पूतदेहः।
पूर्वं निमित्ताद्यनुमापकोऽर्थ संदेहहारी यजनैकचित्तः,
सद्ब्राह्मणो ब्रह्मविदां पटिष्ठो जिनैकधर्मा गुरुदत्तमंत्रः।
भुक्त्वा हविष्यान्नमरात्रिभोजी निद्रां विजेतुं विहितोद्यमश्च,
गतस्पृहो भक्तिपरात्मदुःख - प्रहाणये सिद्धि मनुर्विधिज्ञः।
कुलक्रमापात-सुविद्यया यः प्राप्तोपसर्गं परिहर्तुमीशः,
सोऽयं प्रतिष्ठाविधिषु प्रयोक्ता श्लाघ्योऽन्यथा दोषवती प्रतिष्ठा।

अर्थ–

प्रतिष्ठाचार्य को स्याद्वाद विद्या में प्रवीण, मन्त्रोच्चार के दोष का ज्ञाता, तथा
आलस्य रहित एवं स्वस्थ्य शरीर वाला होना चाहिये।
वह क्रियाओं में कुशल, कषायों को दमन करने वाला,
दानी, शीलवान, उदार तथा इन्द्रियजयी भी हो।
वह देव–शास्त्र–गुरु की श्रद्धा करने वाला तथा शास्त्राभ्यासी,
उपदेशकुशल, क्षमावान और राज्यमान्य हो तथा –
नयों का ज्ञाता, तप अनुष्ठान से पवित्र देह वाला,
और निमित्तज्ञानी भी होना चाहिये।
प्रतिष्ठाचार्य को एक बार भोजन करने वाला, रात्रि भोजन का त्यागी,
निद्रा को जीतने वाला और मन्त्रशास्त्र का ज्ञाता होना चाहिये।
उसे कुलक्रम से प्राप्त विद्या का धनी, और सन्तोषी भी होना चाहिये।
प्रतिष्ठाचार्य में देवकृत, मनुष्यकृत और प्राकृतिक आदि सभी प्रकार के
उपसर्गों का निवारण करने की सामर्थ्य और धीरज हो।
प्रतिष्ठाचार्य में ये सारे गुण होना अनिवार्य है। अन्यथा
उसके द्वारा सम्पादित प्रतिष्ठा निर्दोष नहीं होगी और
उसमें दूषण लगने की आशंका रहेगी।

प्रतिष्ठाचार्य का पद जितना लुभावना और आनन्ददायक समझा जाता है उतना और वैसा यह नहीं है। उसमें भी अनेक कठिन अवसर आते हैं। कुछ प्रश्न तो ऐसे हैं। जिनसे प्रायः हर प्रतिष्ठाचार्य को कहीं न कहीं उलझना पड़ता है। इनमें से दो–तीन ऐसे भी प्रश्न हैं जिनके समाधान कभी मिले नहीं। हमें तो लगता है कि यदि कभी गौतमस्वामी भी स्वयं हमारे सामने प्रगट हो जायें तो उनके द्वारा दिये गये समाधान को भी हमारा समाज शायद सर्वमान्य कहलाने का सौभाग्य नहीं देगा। चलो, देखते हैं ऐसे सन्दर्भों से पुष्पजी किस प्रकार अपनी रक्षा करते हैं।

प्रतिष्ठा कार्यों में द्रव्य-शुद्धि का महत्त्व -

जैन दर्शन के अनुसार किसी भी कार्य की निष्पत्ति में द्रव्य–क्षेत्र–काल और भाव का सहकार अनिवार्य होता है। ये चारों मिलकर कार्य की निष्पत्ति के नियामक कहे जाते हैं। ये चारों जैसे और जितने होंगे वैसा और उतना ही कार्य हो सकेगा यह इतना महत्त्वपूर्ण समीकरण है कि आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने कर्मों की फलदान शक्ति को भी इनके अधीन निरूपित करके हमें बताया कि अपने – 'उदयकाल में द्रव्य–क्षेत्र–काल–भाव के अनुरूप ही कर्म अपना फल दे सकेंगे। यही उदय की परिभाषा है। ये चार प्रायः स्वयमेव नही मिलते, जुटाये जाते हैं। इनमें द्रव्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है क्योंकि कार्य का उपादान वही होता है, शेष तीनों तो निमित्त हैं। इसीलिये पण्डित आशाधरजी ने श्रावक के गुण गिनते समय 'न्यायोपात्तधनः' को सर्व प्रथम रखा है। द्रव्य ही यदि अपवित्र है तो फिर कुछ भी पवित्र नहीं हो सकता।

आज यह बिडम्बना कही जानी चाहिये कि बड़े से बड़े अनुष्ठान की संयोजना में भी द्रव्य शुद्धि के बारे में विचार तक नहीं किया जाता। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक ऐसी परम्परा जीवित रही है कि एक व्यक्ति या एक परिवार ही अपनी ओर से प्रतिष्ठा आदि का आयोजन कराता था, तब तक द्रव्य शुद्धि आदि के ये सारे विवेक सहज सम्भव थे। यजमान को अपनी द्रव्य की शुचिता के बारे में सार्वजनिक रूप से स्पष्ट घोषणा करनी पड़ती थी, उसी पर सर्वाधिक ध्यान दिया जाता था। पुष्पजी के 'प्रतिष्ठा–रत्नाकर' से इसके दो उद्धरण मैं यहाँ प्रस्तुत करना चाहूँगा –

१ श्रावक का कर्तव्य है कि जब जिनेन्द्र प्रतिष्ठा कराने की भावना उत्पन्न हो तब दिगम्बर मुनि के समीप जाकर उनकी चरण वन्दना करके प्रार्थना करें कि – 'भगवन्, मैं अपनी न्यायपूर्वक अर्जित सम्पत्ति का सदुपयोग करके जिनेन्द्र–प्रतिष्ठा कराना चाहता हूँ, कृपा करके मुझे अपना मंगल आशीर्वाद और मार्गदर्शन प्रदान कीजिये'।

–प्रतिष्ठा रत्नाकर पृष्ठ – ३२

२. 'आचार्य–निमन्त्रण' के अवसर पर भी यजमान को प्रतिष्ठाचार्य के स्थान पर जाकर निवेदन करना चाहिये कि – 'मैं अपने न्यायोपार्जित द्रव्य से जिन–बिम्ब की प्रतिष्ठा

कराना चाहता हूँ, आपने अनेक प्रतिष्ठा कार्यों को प्रभावना–पूर्वक कराया है। आप यज्ञ–विधि के ज्ञाता हैं, अतः आप इस महोत्सव को सम्पन्न कराने की स्वीकृति प्रदान करें।

वही पृष्ठ – ७८

धार्मिक अनुष्ठानों को अर्थोपार्जन या व्यवसाय का साधन नहीं बनाना चाहिये। प्रतिष्ठाचार्य और श्रावक वर्ग, दोनों को इसका बहुत ध्यान रखना चाहिये कि विधि–विधान की क्रियायें आगमानुसार हो रही हैं या नहीं, तभी प्रतिष्ठा दोष रहित हो सकती है।

वही पृष्ठ ४७

किन्तु ये सब बीते युग की बातें हैं। पारिवारिक उत्सवों का चलन बदल गया और उनकी जगह धीरे–धीरे सामुदायिक आयोजन होने लगे। तीर्थोद्धार या संस्थाओं को पोषण आयोजन का साध्य बनने लगा और बेचारी प्रतिष्ठा उसका साधन मात्र बनकर रह गईं अब प्रतिष्ठा के नाम पर जो हो रहा है, धनार्जन और लोकरञ्जन ही उसके मुख्य हेतु रह गये हैं। प्रतिष्ठा महत्त्वहीन तथा औपचारिक बनकर हासिये पर चली गई है। शास्त्रीय व्यवस्थाओं के प्रति उपेक्षा भरी ऐसी अवनति दशा में अपने दायित्व का ईमानदारी से निर्वाह करना प्रतिष्ठाचार्य के लिये सचमुच कठिन काम है। अधिकांश प्रतिष्ठाचार्यों ने परिस्थितियों के साथ समझौते कर लिये हैं और कुछ तो इस बहती गंगा में हाथ धोने के लिये धनार्जन का ठेका लेकर उसमें भागीदारी भी करने लगे हैं। ऐसे लोगों के लिये द्रव्यशुद्धि, कालशुद्धि और पात्र परीक्षा का कोई महत्त्व नहीं रह गया है।

इस प्रदूषित वातावरण में जो इने–गिने प्रतिष्ठाचार्य शास्त्र–मर्यादाओं का मान रखते हुए, अपनी कामनाओं को नियन्त्रित रख कर, अपने पद के अनुसार कर्तव्य निर्वाह कर रहे हैं वे सचमुच अभिनन्दनीय हैं। श्री पुष्प उन प्रतिष्ठाचार्यों में से एक, अत्यंत डरपोक प्रतिष्ठाचार्य हैं जो परम्परा की लक्ष्मणरेखा को लाँघने की कल्पना मात्र से काँप जाते हैं। उस पाप से सदा भयभीत रहे और जिन्होंने कभी आगम की आज्ञा का उल्लंघन करने का दुस्साहस नहीं किया। उन्होंने परम्पराओं को उनके सही रूप में जीवित रखने का सदा प्रयास किया और उन्हें खण्डित करके कोई कार्य करना किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं किया। मुझे ज्ञात है कि इसके लिये उन्हें कैसे–कैसे दबाव कई बार झेलना पड़े हैं और कई बार कैसे कैसे प्रलोभनों पर उन्होंने विजय प्राप्त की है। **बुन्देलखण्ड को अपने इस निष्ठावान सपूत पर गर्व है।**

सूरिमन्त्र देने का अधिकारी कौन?

नव–प्रतिष्ठित तीर्थंकर प्रतिमा के कान में सूरिमन्त्र दिये बिना प्रतिष्ठा पूरी नहीं होती। दिगम्बर मुनिराज को ही सूरिमन्त्र देने का अधिकारी प्राचीन काल से माना जाता रहा है।

दक्षिण भारत में वस्त्रधारी भट्टारक प्रथा समाज द्वारा स्वीकृत होने पर उनके द्वारा सूरिमन्त्र दिया जाने लगा। मुनियों का अभाव भी इसमें कारण पड़ा होगा। परन्तु वर्तमान में उत्तर भारत में इस क्रिया को लेकर भारी अनुशासन–हीनता प्रवर्तित है। कई जगह गृहस्थ प्रतिष्ठाचार्य ही नग्न होकर यह शुभ कार्य करने लगे हैं। एक दो जगह तो आर्यिका माताओं द्वारा भी यह पुरुषार्थ करके नया इतिहास बनाने का प्रयत्न सुनने में आया है। परम्पराओं के आलोक में आगम की साक्षी–पूर्वक इस महत्त्वपूर्ण विषय पर कोई निर्णय लिया जाना यद्यपि आवश्यक है, परन्तु जहाँ सभी अहमिन्द्र हों वहाँ कोई किसी की क्यों सुनेगा?

इस सम्बन्ध में पुष्पजी की दृढ़ मान्यता है कि प्रतिमा को सूरिमन्त्र दिगम्बर मुनिराज द्वारा ही दिया जाना चाहिये। प्रतिष्ठाचार्य द्वारा सूरिमन्त्र दिया जाना वे उचित नहीं मानते। उनका स्पष्ट कथन है कि –'रागी गृहस्थ वीतरागी प्रतिमा को सूरिमन्त्र नहीं दे सकता। फिर भी कोई – कोई प्रतिष्ठाचार्य लंगोटी लगाकर या नग्न होकर सूरिमन्त्र देते हैं किन्तु हम वस्त्रधारी लोग निर्ग्रन्थ बिम्ब को सूरिमन्त्र दें यह कदापि उचित नहीं हैं उन्होंने यह भी लिखा है कि – जो प्रतिष्ठाचार्य महानुभाव वस्त्र उतार कर प्रतिमा को सूरिमन्त्र देते हैं उन्हें यह ध्यान रखना चाहिये कि दिगम्बर मुनि–मुद्रा धारण करने के उपरान्त पुनः वस्त्र धारण करना कहां तक उचित है? हम स्वयं विचार करें कि क्या इस प्रकार अनधिकृत व्यक्ति द्वारा दिया गया सूरिमन्त्र और आगम–विरुद्ध कराई गई प्राण–प्रतिष्ठा निर्दोष कही जा सकती है? क्या उसमें जिनबिम्ब में वांछित प्रभाव और अतिशय कभी प्रगट हो सकता है? वराहमिहिर ने भी अपनी वृहत्संहिता में स्पष्ट लिखा है कि – 'जिन प्रतिमा की प्रतिष्ठा दिगम्बर क्षपण ही करें।'

पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' द्वारा सम्पादित प्रमुख विधि-विधान एवं अनुष्ठान

यह कहावत प्रचलित है कि पं. 'पुष्प' जी द्वारा सम्पन्न कराये गये विधि-विधान पूर्ण फलदायी होते हैं। यही कारण है कि न केवल बुन्देलखण्ड में अपितु देश के अनेक प्रदेशों में पं. जी ने शताधिक विधि-विधान सम्पादित कराये जिनमें सिद्धचक्र विधान, त्रिलोकतिलक विधान, इन्द्रध्वज विधान, वेदीप्रतिष्ठा, कल्पद्रुम विधान, णमोकार मंत्र अनुष्ठान आदि प्रमुख हैं, मुख्य विधि-विधानों के सम्पादित कराने का विशेष विवरण तालिका में प्रस्तुत है :-

क्र.	दिनांक	स्थान	आयोजन	सान्निध्य	उपाधि	विशेष
१	दशलक्षण १९४५	शाहपुर (सागर)	त्रैलोक्य तिलक विधान	मुनिश्री आदिसागर जी	-	स्वतन्त्र प्रथम विधान
२	१३.२.५७	सोजना झाँसी	सिद्धचक्र विधान	-	-	
३	२३.५.५८	पाटन, जबलपुर	सिद्धचक्र विधान	क्षु. पद्मसागर जी क्षु. स्वरूपसागर जी	-	
४	१९६१	कानपुर	सिद्धचक्र विधान	-	-	
५	१९६२	कोतमा	सिद्धचक्र विधान	-	-	
६	नव. १९६६	मालथौन	सिद्धचक्र विधान	-	-	
७	३ से २७ मार्च ७३	झाँसी	त्रैलोक्य तिलक विधान	-	-	
८	९.५.७६	खटौरा, सागर	सिद्धचक्र विधान	-	-	
९	१०.९.७६	डोंगरगांव, राजनांदगांव	सिद्धचक्र विधान	-	-	
१०	१९७७	छीपीटोला, आगरा	सिद्धचक्र विधान	-	-	
११	२६.९.७७	ललितपुर	पर्युषण	-	वाणी भूषण	
१२	२२.२.७८	टीकमगढ़	इन्द्रध्वज विधान	मुनिश्री पार्श्वसागर जी नेमिसागर जी, वासुपूज्य सागर जी	-	
१३	१५.३.७८	सदगुवां, दमोह	सिद्धचक्र विधान	-	-	
१४	९.४.७८	बाकल	सिद्धचक्र विधान	-	विद्वत् रत्न	
१५	११.८.७८	भोपाल	इन्द्रध्वज विधान	-	-	
१६	१.९.७८	मंगलवारा,भोपाल	इन्द्रध्वज विधान	-	-	
१७	२७.११.७८	बछरावनी, छतरपुर	वेदी प्रतिष्ठा	-	-	
१८	८ संवत् १९२५	बरगीनगर	वेदी प्रतिष्ठा	-	पण्डित रत्न	
१९	१०.५.८२	ककरवाहा	इन्द्रध्वज विधान	-	-	अभिनन्दन समारोह
२०	१६.१२.८२	बड़ागाँव धसान	इन्द्रध्वज विधान	मुनिश्री श्रुत सागर जी	-	
२१	२८.९.८४	बंडा, सागर	इन्द्रध्वज विधान	-	धर्मरत्न	
२२	१६.४.८५	संग्रामपुर, दमोह	सिद्धचक्र विधान	-	-	
२३	९.१.८८	हैदराबाद	इन्द्रध्वज विधान	-	-	
२४	१४.११.८९	कानपुर	इन्द्रध्वज विधान	-	-	
२५	६.२.९०	नहटौर, बिजनौर	वेदी प्रतिष्ठा	-	-	

क्र.	दिनांक	स्थान	आयोजन	सान्निध्य	उपाधि	विशेष
२६	पर्यूषण १९९०	मुजफ्फरनगर	कल्पद्रुम विधान	आ.श्री कनकनन्दी जी	-	
२७	नबम्बर ९१	कानपुर	सिद्धचक्र विधान	-	-	
२८	६.१२.९१	कानपुर	णमोकारमन्त्र अनुष्ठान	आ.कल्याणसागर जी	-	
२९	फरवरी १९९२	फागी, जयपुर	णमोकारमन्त्र अनुष्ठान			
३०	२५.९.९२	विदिशा	कल्पद्रुम विधान	मुनिश्री क्षमासागर जी मुनिश्री समतासागर जी मुनिश्री प्रमाणसागर जी	लौह पुरुष	
३१	१४.१०.९२	नीमच	णमोकार जाप	आ.श्री कल्याणसागर जी	-	
३२	१८.१.९३	टीकमगढ़	सिद्धचक्र विधान	आ.श्री विरागसागर जी	-	
३३	७.६.९४	सूरत	सिद्धचक्र विधान	-	-	
३४	२८.१२.९४	टीकमगढ़	इन्द्रध्वज विधान	-	-	
३५	३.७.९६	राजस्थली, दिल्ली	सिद्धचक्र विधान	-	-	
३६	२०.७.९७	यमुना बिहार दिल्ली	कल्पद्रुम विधान	-	-	
३७	भादौ पूर्णिमा	गढ़ाकोटा	सिद्धचक्र विधान	-	सम्यक्त्व विधान	
३८	५ संवत् १९४७	भौना, सिवनी	वेदी प्रतिष्ठा	-	-	
३९	२१.८.२०००	बड़ौदिया (वासवाड़ा)	सिद्धचक्र विधान	ऐ. निशंकसागर, निर्भयसागर	-	
४०	२१.६.९९	बड़ौत	मानस्तम्भ कलशारोहण	आचार्यश्री विद्यानन्द जी	-	आ.श्री द्वारा यम सल्ले.व्रत
४१	पर्युषण ९९	शालीमार	दशलक्षण	-	-	
४२	५.४.९१	ग्वालियर	णमोकारमन्त्र अनुष्ठान	आचार्यश्री कल्याणसागर	-	
४३	२५.७.९१	मुक्तागिरि	नन्दीश्वरदीप विधान	आचार्यश्री विद्यासागर	-	१३ ऐलक दीक्षाएँ
४४	१४.१०.९४	मुरैना	प्रतिष्ठाचार्य शिक्षण प्रशिक्षण शिविर	-	व्याख्यान वाचस्पति	५० विद्वानों को प्रशिक्षण
४५	२५.८.९८	सासनी(हाथरस)	इन्द्रध्वज विधान	-	-	
४६	२६.११.९६	चन्द्रपुर	इन्द्रध्वज विधान	-	-	-
४७	५.११.९८	चन्द्रपुर	तीन लोक विधान	-	-	-
४८	२५.६.९९	सांगानेर	यक्षरक्षित रत्नप्रतिमाभिषेक	मुनिश्री सुधासागर जी	-	-
४९	१५.५२०००	राजस्थली दिल्ली	त्रैलोक्य विधान	उपा. कामकुमारनन्दिजी	-	शास्त्रि परिष्द् का अधिवेशन

पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' द्वारा सम्पादित प्रमुख पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

पाषाण में देवत्व स्थापना का कार्य अत्यन्त जटिल है। जिसका व्यक्तित्व आचार और विचार के स्तर पर एकरूप हो जो निःस्पृही, संयमी और व्रती है वही इस कार्य को सफलतापूर्वक सम्पादित कर सकता है। प्रतिष्ठा कार्य के लिए आवश्यक इन मूलभूत गुणों के अभाव वाले व्यक्ति के द्वारा करायी गई प्रतिष्ठा आदि कार्य निरतिशय और निष्फल होते हैं। शास्त्रानुसार प्रतिष्ठाचार्य के लक्षणों से सम्पन्न पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' द्वारा देश के कोने-कोने में सैकड़ों पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठाएँ सुसम्पन्न करायी गयी हैं, यही वजह है कि उन स्थानों देवमूर्ति और मन्दिरों में आज भी अतिशय दृष्टिगोचर होता है।

प्रमुख पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठाएँ जो पं. 'पुष्प' जी द्वारा करायी गयी हैं, उनकी सारणी अधोलिखित है-

क्र.	दिनांक	स्थान	सान्निध्य	उपाधि	अलंकरण	विशेष
१	१९.९.५७	गढ़ी, रायसेन	-	-	-	
२	१२.१२.७५	टीकमगढ़	मुनिश्री नेमिसागर जी मुनिश्री सम्भवसागर जी मु.स्वर्णभद्रसागर जी	-	-	
३	१२.१२.७७	अयोध्या	आ. विमलसागर जी	प्रतिष्ठा विज्ञ	अभिनन्दन पत्र	
४	१२.६.७८	सरधना, मेरठ		-	--"--	
५	२१.४.७९	अम्बाला	-	-	-	
६	९.५.७९	बली, उदयपुर	मुनि आदिसागर जी	-	-	
७	१४.२.८४	उदा. आश्रम सागर	आ. सन्मतिसागर जी	-	-	नवीन जिनालय
८	३०.५.८५	फिरोजाबाद	उपा. विद्यानन्द जी		-	४५ फुट की बाहुबली प्रतिमा की स्थापना
९	१४.४.८६	राजगृही		-	रजत प्रशस्ति पत्र	भगवान् महावीर देशना स्मारक निर्माण
१०	१०.३.८७	बड़ौत	आ. विद्यानन्द जी	-	प्रतीक चिह्न	-
११	१५.५.८७	देहरादून	मु. आदिसागर जी माँश्री कौशल	-	प्रतीक चिह्न अभिनन्दन पत्र	भगवान महावीर जिनालय
१२	५.१२.८७	भिलाई	आ. कल्प श्रेयांससागर जी	-	-	-
१३	१२.३.८८	दुर्ग	क्षुल्लक सिद्धसागर जी	प्रतिष्ठा दिवाकर	अभिनन्दन पत्र	
१४	३१.१.९०	किशनगंज, अलवर	आ. शान्तिसागर	-	-	-

क्र.	दिनांक	स्थान	सान्निध्य	उपाधि	अलंकरण	विशेष
१५	३०.१.९१	कविनगर, गाजियाबाद	आ. शान्तिसागर जी माँश्री कौशल	-	प्रतीक चिह्न	पार्श्वनाथ जिनालय निर्माण
१६	२०.१.९२	चन्द्रपुर	-	-	प्रतीक चिह्न	-
१७	३.३.९४	साढूमल	आ. विरागसागर जी	-	-	-
१८	१३.३.९५	खतौली	आ. शान्तिसागर जी	-	प्रतीक चिह्न	निशिया शान्तिनाथ जिनालय निर्माण
१९	७.५.९५	सहारनपुर	उपा. ज्ञानसागर जी	-	रजत प्रतीक चिह्न	२ नवीन पार्श्वनाथ, महावीर जिनालय निर्माण
२०	३१.१.९६	सोनीपत	उपा. गुप्तिसागर जी	प्रतिष्ठा तिलक	प्रतीक चिह्न प्रशस्ति पत्र	नवीन जिनालय
२१	२३.५.९६	बरनावा	उपा. ज्ञानसागर जी	-	प्रतीक चिह्न कलश	कमल मन्दिर निर्माण
२२	२०.२.९७	मॉडल टाऊन, दिल्ली	आ. विद्यानन्द जी	-	प्रतीक चिह्न	नवीन महावीर जिनालय निर्माण
२३	२४.११.९७	बड़ौदामेव अलवर	उपा. ज्ञानसागर जी	-	--"--	चन्द्रप्रभ मन्दिर निर्माण
२४	१.१२.९७	टीकमगढ़	आ. सन्मतिसागर जी	-	अभिनन्दन पत्र	नन्दीश्वर द्वीप, आश्रम निर्माण दीक्षा समारोह
२५	६.२.९८	प्रीत बिहार, दिल्ली	उपा. गुप्तिसागर जी	-	रजत प्रतीक चिह्न	भ. महावीर जिनालय निर्माण
२६	११.२.९८	ककरवाहा	मु. निर्णयसागर जी मु. विहर्षसागर जी	-	प्रशस्ति पत्र	मानस्तम्भ जीर्णोद्धार
२७	५.३.९८	कृष्णा नगर, दिल्ली	उपा. गुप्तिसागर जी	-	प्रतीक चिह्न	महावीर जिनालय निर्माण
२८	२७.४.९९	चन्द्रलोक, दिल्ली	उपा.आनन्दसागर जी	-	प्रतीक चिह्न	चन्द्रप्रभ जिनालय
२९	२१.१.२०००	रेवाड़ी	मुनि श्रुतसागर जी	-	प्रतीक चिह्न	बाहुबली जिनालय
३०	१७.२.२०००	शालीमार बाग, दिल्ली	आ. विद्यानन्द जी	-	रजत प्रशस्ति पत्र	पाषाण द्वारा भव्य नेमिनाथ जिनालय निर्माण
३१	३.३.२०००	ललितपुर	मुनि क्षमासागर जी	-	-	काँच का समवसरण मन्दिर निर्माण
३२	८.२.२००१	बड़ागाँव, बागपत	उपा. ज्ञानसागर जी	-	रजत प्रशस्ति पत्र एवं प्रतीक चिह्न	जिनालय जीर्णोद्धार
३३	३.३.२००१	संजयनगर, गाजियाबाद	मुनि नमिसागर जी माँ श्री कौशल जी	-	प्रतीक चिह्न	भगवान् महावीर जिनालय निर्माण
३४	७.५.२००१	बरनावा	उपा. ज्ञानसागर	-	प्रतीक चिह्न	चौबीसी एवं मानस्तम्भ

पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' द्वारा सम्पादित प्रमुख गजरथ महोत्सव

बीसवीं शती के विश्व विश्रुत अप्रतिम प्रतिष्ठाचार्य एवं मनीषी विद्वान् पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' ने अद्यावधि देश के विभिन्न स्थानों पर अपने आचार्यत्व में गजरथ महोत्सव सम्पन्न करवाये। बुन्देलखण्ड में धार्मिक प्रभावना के उद्देश्य से आयोजित ये महोत्सव अपनी विशेषताओं के कारण सांस्कृतिक ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व रखते हैं। यही कारण है कि इन महोत्सवों की सुरभि से बुन्देलखण्ड के अलावा देश के दूसरे भाग भी प्रभावित हुए और वहाँ पर भी ये महोत्सव धार्मिक प्रभावना के प्रमुख अंग बन गये। बुन्देलखण्ड की इस विरासत को तीन पीढ़ी से आगे बढ़ा रहे पं. 'पुष्प' जी ने परमपूज्य आचार्यों, मुनिराजों के परम सान्निध्य में बुन्देलखण्ड में लगभग पचास गजरथ कराने के साथ उत्तरप्रदेश, बहलना, मुजफ्फरनगर, प्रभाषगिरि, राजस्थान में किशनगढ़, मदनगंज और आचार्यश्री आर्यनन्दि के सान्निध्य में आन्ध्रप्रदेश के हैदराबाद में भी गजरथ महोत्सव सम्पादित कराये।

ध्यातव्य है कि बुन्देलखण्ड की यह विरासत अन्य प्रदेशों में ले जाने का श्रेय आदरणीय 'पुष्प' जी को ही है। पं. 'पुष्प' जी द्वारा सम्पादित प्रमुख गजरथ महोत्सवों की सारणी प्रस्तुत है -

क्र.	दिनांक	स्थान	सान्निध्य	उपाधि	अलंकरण	विशेष
१	२४.२.५८	अहार, टीकमगढ़	मुनि आदिसागर जी मुनि चन्द्रकीर्ति जी	-	- -	
२	१५.३.६५	पपौरा, टीकमगढ़	आचार्य शिवसागर जी	-	अभिनन्दन पत्र	
३	१८.२.७१	अहार, टीकमगढ़	मुनि नेमिसागर जी	-	-	त्रिकाल चौबीसी जिनालय
४	७.३.७४	अहार, टीकमगढ़	मुनि नेमिसागर जी	धर्म दिवाकर	प्रशस्ति पत्र	जिनालय जीर्णोद्धार
५	२३.५.७७	द्रोणगिरि, छतरपुर	आचार्य विद्यासागर जी मुनि आर्यनन्दी जी	वाणीभूषण	आभार पत्र	चौबीसी जिनालय
६	६.३.७८	बीना बारहा, सागर	आचार्य विद्यासागर जी	संहितासूरि	--"--	त्रयगजरथ
७	३१.५.७९	किशनगढ़	आचार्य विद्यासागर जी	-	सम्मान पत्र	-
८	२६.१.८१	खजुराहो, छतरपुर	आचार्य विद्यासागर जी	-	अभिनन्दन पत्र	
९	१०.५.८१	सिलवानी, रायसेन	-	-	प्रशस्ति पत्र	-
१०	६.३.८२	पपौरा, टीकमगढ़	मुनि नेमिसागर जी	-	आभार पत्र	बाहुबली जिनालय निर्माण
११	२७.५.८२	बीना, सागर	-	प्रतिष्ठारत्न	सम्मान पत्र	-
१२	२३.१.८४	घुवारा, छतरपुर	मुनि नेमिसागर जी मुनि नित्यानन्द जी	प्रतिष्ठा तिलक	--"--	श्री गणेशप्रसाद वर्णी स्नातक महाविद्यालय की स्थापना

क्र.	दिनांक	स्थान	सान्निध्य	उपाधि	अलंकरण	विशेष
१३.	१४.२.८५	गंजबासौदा	आचार्य विद्यासागर जी	–	अभिनन्दन पत्र	त्रय गजरथ
१४	१०.५.८५	नवागढ़, ललितपुर	मुनि नेमिसागर जी	तीर्थभक्त	सम्मान पत्र	क्षुल्लक दीक्षा, त्रय गजरथ
१५	१६.३.८६	बरायठा, सागर	मुनि योगसागर जी मुनि क्षमासागर जी	–	अभिनन्दन पत्र	बाहुबली जिनालय
१६	१५.५.८६	हैदराबाद	आचार्य आर्यनन्दि जी	–	अभिनन्दन पत्र	आंध्रप्रदेश में प्रथम गजरथ केशरबाग जिनालय निर्माण
१७	१२.२.८७	नैनागिरि, छतरपुर	आचार्य विद्यासागर जी	–	अभिनन्दन पत्र	११ आर्यिका व १२ क्षु. दीक्षा त्रयगजरथ, पार्श्वनाथ समवसरण जिनालय निर्माण
१८	२६.२.८८	सहजपुर	आचार्य सम्मेदसागर जी	–	--"--	–
१९	२२.२.८९	गोटेगाँव	आचार्य विद्यासागर जी	–	--"--	त्रय गजरथ
२०	१९.५.८९	बड़ामलहरा, छतरपुर	आचार्य विद्याभूषण सन्मति सागर जी	–	सम्मान पत्र	–
२१	८.२.९०	पथरिया	आचार्य विद्यासागर जी	–	--"--	–
२२	२२.२.९०	नरसिंहपुर	आचार्य विद्यासागर जी	–	प्रशस्ति पत्र	5+2 आर्यिका दीक्षाएँ
२३	२१.१.९१	सूखी सेवनिया,भोपाल	आचार्य विद्याभूषण सन्मति सागर जी	–	प्रतीक चिह्न	प्रतिष्ठाचार्य प्रशिक्षण शिविर
२४	२४.२.९१	कटंगी	मुनि क्षमासागर जी	–	अभिनन्दन पत्र	–
२५	फरवरी ९२	तालबेहट	मुनि सुधासागर जी	–	–	–
२६	१६.४.९२	मुजफ्फरनगर	मुनि शान्तिसागर जी मुनि आदिसागर जी	संहितासूरि	रजत प्रशस्ति पत्र	मानस्तम्भ निर्माण, उत्तरांचल में प्रथम गजरथ
२७	२.१२.९२	अशोकनगर	मुनि सुधासागर जी	–	रजत प्रशस्ति पत्र	सप्तगजरथ, त्रिकाल चौबीसी जिनालय
२८	३.३.९३	साढूमल	आचार्य विरागसागरजी	–		बाहुबली जिनालय

क्र.	दिनांक	स्थान	सान्निध्य	उपाधि	अलंकरण	विशेष
२९	१७.३.१९९४	हस्तिनापुर	आचार्य विद्यानन्दजी	-		समवसरण नेमिनाथ, पार्श्वनाथ जिनालय
३०	२९.३.९४	गोसलपुर, जबलपुर	श्री सम्मेदसागर जी	-	सम्मान पत्र	सम्मेदगिरि क्षेत्र का निर्माण
३१	१८.४.९४	बहलना, मुजफ्फरनगर	आ. विद्यानन्द जी	-	-	५७' उत्तुग मानस्तम्भ निर्माण
३२	२२.१.९५	रजवांस, सागर	मुनि विशुद्धसागर जी	ज्योतिर्विद्	प्रतीक चिह्न	-
३३	९.२.९६	खुरई, सागर	मुनि क्षमासागर जी	-	अभिनन्दन पत्र	
३४	फरवरी ९६	प्रभाषगिरि, इलाहाबाद	आचार्य पुष्पदन्तसागर जी	-	सम्मान पत्र	विमलनाथ जिनालय का निर्माण
३५	२१.२.९८	अहार, टीकमगढ़	मुनि सुदर्शनसागर जी	-	प्रतीक चिह्न	-
३६	६.५.९८	भाग्योदय, सागर	आचार्य विद्यासागर जी	-	--"--	प्रतिष्ठारत्नाकर का विमोचन समारोह
३७	२२.१.९९	मालथौन, सागर	मुनि समतासागर जी मुनि प्रमाणसागर जी	-	--"--	त्रय गजरथ
३८	१५.२.९९	दलपतपुर, सागर	मुनि सुदर्शनसागर	-	सम्मान पत्र	-
३९	२३.४.२०००	साँची, विदिशा	मुनि समतासागर मुनि प्रमाणसागर	-	प्रतीक चिह्न	शीतलनाथ जिनालय का निर्माण

प्रमुख नूतन जिनालय जो पण्डित 'पुष्प' जी के प्रतिष्ठाचार्यत्व में पूज्य हुए

सांस्कृतिक विरासत में मन्दिर अमूल्य धरोहर हैं। वह धार्मिक आस्था का प्रमुख केन्द्र हैं। यह एक व्याप्ति सी बन गई है कि जहाँ-जहाँ जैन, वहाँ-वहाँ जैन मन्दिर। यह भी सत्य है कि जहाँ-जहाँ जैन स्थाई निवास बनायेंगे भविष्य में वहाँ-वहाँ जैन मन्दिरों का नव निर्माण होता रहेगा। नूतन जिनालयों में जिनदेव के अधिष्ठान के अनुरूप पूज्यत्व की प्रतिष्ठा कुशल प्रतिष्ठाचार्य के द्वारा ही सम्भव होता है। पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' ने इस कार्य को बखूबी से किया और उन्होंने सम्पूर्ण देश में अपने प्रतिष्ठाचार्यत्व में प्रतिष्ठाएँ निष्पादित कर अनेक नवीन-जिनालयों को पूज्यत्व प्राप्त कराया है। यहाँ सारणी में प्रमुख जिनालयों का विशेष विवरण प्रस्तुत है।

क्रमांक	दिनांक	स्थान	जिनालय
१	१८.२.७१	अहार जी, टीकमगढ़	त्रिकाल चौबीसी जिनालय
२	७.३.७४	अहार जी, टीकमगढ़	
३	१९७७	सिद्धक्षेत्र, द्रोणगिरि जी	चौबीसी जिनालय
४	३०.५.८५	फिरोजाबाद	भगवान् बाहुबली बिम्ब एवं जिनालय
५	१४.४.८६	सिद्धक्षेत्र राजगृही	भगवान् महावीर देशना स्मारक
६	१९८६	बरायठा	बाहुबली जिनालय
७	१२.२.८७	नैनागिरि	पार्श्वनाथ समवसरण जिनालय
८	१५.५.८७	देहरादून	भगवान् महावीर जिनालय
९	९.१.८८	हैदराबाद	केशरबाग मन्दिर जिनालय
१०	३०.१.९१	गाजियाबाद	पार्श्वनाथ जिनालय
११	१६.४.९२	मुजफ्फरनगर	मानस्तम्भ
१२	२.१२.९२	अशोकनगर	त्रिकाल चौबीसी जिनालय
१३	१९९३	साढूमल	बाहुबली जिनालय
१४	१७.३.९४	हस्तिनापुर	समवसरण नेमिनाथ, पार्श्वनाथ जिनालय
१५	१९.३.९४	गोसलपुर	सम्मेदगिरि क्षेत्र
१६	१८.४.९४	वहलना	५७ फुट उत्तुंग मानस्तम्भ
१७	१३.२.९५	खतौली	शान्तिनाथ जिनालय निसिया
१८	७.५.९५	सहारनपुर	पार्श्वनाथ जिनालय, महावीर जिनालय
१९	फरवरी १९९६	प्रभासगिरि	विमलनाथ जिनालय
२०	२३.५.९६	बरनावा	कमल मन्दिर

क्रमांक	दिनांक	स्थान	जिनालय
२१	२०.२.९७	मॉडल टाउन, दिल्ली	महावीर जिनालय
२२	११.१९९७	बड़ौदामेव	नसिया जिनालय
२३	६.२.९८	प्रीत बिहार, दिल्ली	महावीर जिनालय
२४	५.३.९८	कृष्णानगर	महावीर जिनालय
२५	१०.२.९९	ककरवाहा	मानस्तम्भ जीर्णोद्धार
२६	२७.४.९९	चन्द्रलोक, दिल्ली	चन्द्रप्रभ जिनालय
२७	२१.१२.९९	टीकमगढ़	नन्दीश्वर द्वीप एवं आश्रम जिनालय
२८	२१.११.२०००	रेवाड़ी	बाहुबली जिनालय
२९	१७.३.२०००	शालीमारबाग, दिल्ली	नेमिनाथ जिनालय
३०	३०.३.२०००	ललितपुर	समवसरण जिनालय
३१	२३.४.२०००	साँची	शीतलनाथ जिनालय
३२	३.३.२००१	संजयनगर, गाजियाबाद	महावीर जिनालय
३३	७.५.२००१	बरनावा	चौबीसी एवं मानस्तम्भ

पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' द्वारा सम्पादित पञ्चकल्याणकों एवं विधानों के अवसर पर सम्पन्न दीक्षाएँ

स्वनामधन्य यशस्वी प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' का प्रतिष्ठा एवं विधि-विधानों के क्षेत्र में महनीय अवदान है। उनका सौभाग्य रहा है कि उनके द्वारा सम्पादित पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठाओं एवं विधानों के अवसर पर परमपूज्य आचार्यों एवं मुनिवरों के पावन सान्निध्य में अनेक मुनि, आर्यिका, ऐलक एवं क्षुल्लक दीक्षाएँ सम्पन्न हुई हैं। इससे उनके द्वारा सम्पादित पञ्चकल्याणकों एवं विधानों की महत्ता बढ़ी है तथा उनका जैन समाज पर चिरस्थाई प्रभाव पड़ा है।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़, गजरथ महोत्सव ९.५.८५ को मुनि श्री नेमिसागर जी महाराज द्वारा क्षुल्लक दीक्षा समारोह

क्रमांक	दीक्षार्थी का नाम	जन्म स्थान	दीक्षा के बाद नाम
१	ब्र. रवीन्द्रकुमार जी	–	क्षु. आनन्द सागर

श्री दिग. जैन सिद्ध क्षेत्र अहार जी, चातुर्मास ८.११.८५ को आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज द्वारा क्षुल्लक दीक्षा समारोह

१	ब्र. नवीन जी	हजारीबाग	क्षु. प्रमाण सागर जी
२	ब्र. ऋषभकुमार जी	दुर्ग	क्षु. प्रशम सागर जी
३	ब्र. प्रकाश जी	भिलाई, दुर्ग	क्षु. ध्यान सागर जी
४	ब्र. सनत जी	बण्डा, सागर	क्षु. सम्यक्त्व सागर जी
५	ब्र. वीरेन्द्र जी	पाँचवा	क्षु. संवेग सागर जी
६	ब्र. संतोष जी	जबलपुर	क्षु. मंगल सागर जी
७	ब्र. संजय जी	पिडरुआ	क्षु. वात्सल्य सागर जी
८	ब्र. पारस जी	पथरिया	क्षु. आर्जव सागर जी
९	ब्र. वीरेन्द्र जी	पठा – सागर	क्षु. मार्दव सागर जी

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नैनागिरि, गजरथ महोत्सव १०.२.८७ को आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज द्वारा आर्यिका एवं क्षुल्लक दीक्षा समारोह

१	ब्र. बहिन सुमन जी	बण्डा, सागर	आ. गुरुमति जी
२	ब्र. बहिन सुनीता जी	सागर	आ. दृढ़मति जी
३	ब्र. बहिन कुसुम जी	बलेह, रहली	आ. मृदुमति जी
४	ब्र. बहिन ज्योति जी	सागर	आ. ऋजुमति जी
५	ब्र. बहिन किरण जी	जबलपुर	आ. तपोमति जी
६	ब्र. बहिन कमलेश जी	हिनौता, दमोह	आ. सत्यमति जी
७	ब्र. बहिन कमला जी	शाहगढ़, सागर	आ. गुणमति जी
८	ब्र. बहिन गुणमाला जी	शाहगढ़, सागर	आ. जिनमति जी
९	ब्र. बहिन उषा जी	सीतापार, नरसिंहपुर	आ. निर्णयमति जी
१०	ब्र. बहिन शारदा जी	दुर्ग	आ. उज्ज्वलमति जी
११	ब्र. बहिन लक्ष्मी जी	मेढ़ी, जबलपुर	आ. पावनमति जी

क्षुल्लक दीक्षा समारोह

१	ब्र. शैलेष जी	जबलपुर	क्षु. प्रसन्न सागर जी
२	ब्र. कमलेशकुमार जी	जबलपुर	क्षु. पवित्र सागर जी
३	ब्र. श्रीपाल जी	अब्दुल्लागंज	क्षु. उत्तम सागर जी
४	ब्र. ऋषभकुमार जी	जेसीनगर, सागर	क्षु. निश्चय सागर जी
५	ब्र. मुकेशकुमार जी	बांसा, दमोह	क्षु. उदारसागर जी
६	ब्र. अभयकुमार जी	धबौली, सागर	क्षु. निर्भय सागर जी
७	ब्र. जिनेन्द्रकुमार जी	बडागांव, टीकमगढ़	क्षु. नय सागर जी
८	ब्र. राजेशकुमार जी	जबलपुर	क्षु. गम्भीर सागर जी
९	ब्र. संजयकुमार जी	जबलपुर	क्षु. धैर्य सागर जी
१०	ब्र. चन्द्रकुमार जी	सिमरिया, सागर	क्षु. चन्द्र सागर जी
११	ब्र. पवनकुमार जी	छतरपुर	क्षु. विनय सागर जी
१२	ब्र. देवेन्द्रकुमार जी	दमोह	क्षु. निसर्ग सागर जी

श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि में ३१.३.१९८८ को आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज द्वारा मुनिदीक्षा समारोह

१	ब्र. नवीन जी	हजारीबाग, बिहार	मुनि प्रमाण सागर जी
२	ब्र. पारस जी	फुटेरा, दमोह	मुनि आर्जव सागर जी
३	ब्र. वीरेन्द्रकुमार जी	पठा, सागर	मुनि मार्दव सागर जी
४	ब्र. कमलेश जी	जबलपुर	मुनि पवित्र सागर जी
५	ब्र. श्रीपाल जी	अब्दुललाठ, महाराष्ट्र	मुनि उत्तम सागर जी
६	ब्र. धर्णेन्द्रकुमार जी	जुगूल, बेलगांव	मुनि चिन्मय सागर जी
७	ब्र. जयपाल जी	खौत, कानवाड़ी	मुनि पावन सागर जी
८	ब्र. प्रमोदकुमार जी	मुंगावली, गुना	मुनि सुख सागर जी

नरसिंहपुर, गजरस्थ महोत्सव २०.२.१९९० को आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज द्वारा आर्यिकादीक्षा समारोह

१	ब्र. बहिन उमा जी	रायपुर	आ. साधनामति जी
२	ब्र. बहिन अर्चना जी	टड़ा, सागर	आ. विलक्षणामति जी
३	ब्र. बहिन कान्ति जी	शाहगढ़, सागर	आ. धारणामति जी
४	ब्र. बहिन हेमलता जी	खुरई, सागर	आ. प्रभावनामति जी
५	ब्र. बहिन शिखा जी	पिण्डरै, मण्डला	आ. चिन्तनमति जी
६	ब्र. बहिन नीलू जी	अशोकनगर, गुना	आ. वैराग्यमति जी

श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र मुक्तागिरि,नन्दीश्वरद्वीप विधान १६.५.१९९१ को आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज द्वारा ऐलकदीक्षा समारोह

१	ब्र. सुमनकुमार जी	गढ़ाकोटा, सागर	ऐ. सिद्धान्तसागर जी
२	ब्र. राजेशकुमार जी	सागर	ऐ. सम्पूर्णसागर जी
३	ब्र. महावीर जी	समडोली, सांगली	ऐ. अपूर्वसागर जी
४	ब्र. वकुल कान्ते जी	सिरोल, कोल्हापुर	ऐ. अक्षयसागर जी
५	ब्र. राजेन्द्रकुमार जी	ललितपुर	ऐ. रयणसागर जी
६	ब्र. राजेशकुमार जी	गोटेगांव, नरसिंहपुर	ऐ. प्रशान्तसागर जी
७	ब्र. मुकेशकुमार जी	मण्डला	ऐ. पूर्णसागर जी

टीकमगढ़ पंचकल्याणक महोत्सव ९.१२.१९९७ को आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज द्वारा क्षुल्लक दीक्षा समारोह

१	ब्र. हीरालाल जैन	–	क्षु. सन्तसागर जी

पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' द्वारा
प्रतिष्ठा/विधि-विधान के शिक्षण/प्रशिक्षण शिविर

अकेला सिद्धान्त बिना व्यवहारिक प्रयोग के निरर्थक है। जब तक कोई प्रतिष्ठा/विधि-विधानों में प्रयुक्त मन्त्रादि के अनुरूप यथोचित सम्यक् क्रियाओं का प्रशिक्षण/प्रयोग कुशल प्रशिक्षक के निर्देशन में प्राप्त नहीं कर लेता तब तक यह विधि-विधान कराने में सक्षम नहीं होता। फिर भी यदि कोई बिना प्रशिक्षण के प्रतिष्ठा, विधि-विधान आदि सम्पन्न कराता है, तो मन्त्रों एवं क्रिया की अशुद्धि का दुष्परिणाम, प्रतिष्ठाचार्य एवं समाज पर असर डालता है। इस बात को ध्यान में रखकर पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' ने प्रतिष्ठा/विधि-विधान के अनुभूत प्रयोगों को विद्वानों, ब्रह्मचारी भाईयों, ब्रह्मचारिणी बहिनों, नव प्रतिष्ठाचार्यों एवं विद्यार्थियों को मुरैना, भोपाल, गाजियाबाद, मेरठ, टीकमगढ़ आदि स्थानों पर शिविरों के माध्यम से शिक्षण-प्रशिक्षण देकर सार्थकता सिद्ध की/शिक्षण/प्रशिक्षण शिविरों का विशेष विवरण अधोलिखित है :-

क्र.	दिनांक	स्थान	सान्निध्य	शिक्षण/प्रशिक्षण	विशेष
१	४.१०.८४ से १४.१०.८४	मुरैना	–	विद्वानों एवं विद्यार्थियों को विधि-विधान का शिक्षण/प्रशिक्षण	कुलपति
२	१२.१.९१ से २१.१.९१	सूखी सेवनिया, भोपाल	आ.श्री सन्मतिसागर जी	प्रतिष्ठाचार्य प्रशिक्षण शिविर जिसमें ५० विद्वानों ने प्रशिक्षण लिया	–
३	१३.५.९४ से २३.५.९४	अमरकंटक	आचार्य विद्यासागर जी	विद्यार्थियों को शिक्षण प्रशिक्षण	
४	३.६.९५	टीकमगढ़	आचार्यविरागसागर जी	ग्रीष्म कालीन वाचना	संगोष्ठी
५	२.८.९७ से २०.९.९७	टीकमगढ़	आ.श्री सन्मतिसागर जी	ब्रह्मचारी भाई एवं बहिनों को प्रतिष्ठा, वास्तु का प्रशिक्षण	संगोष्ठी संयोजक
६	२८.५.९८ से २.६.९८	मेरठ	उपा.श्री ज्ञानसागर जी	विद्वानों को विधि-विधान का शिक्षण	संगोष्ठी
७	१.६.९९ से १०.६.९९	इन्दौर	ऐलक सिद्धान्त सागर जी	३० ब्रह्मचारी भाई बहिनों को शिक्षण प्रशिक्षण	
८	२५.२.२००१ से ३.३.२००१	सूर्य नागर, गाजियाबाद	उपा.श्री ज्ञानसागर जी	८ ब्रह्मचारियों को विधि-विधान का प्रशिक्षण	संगोष्ठी
९	१२.३.२००१ से २०.३.२००१	टीकमगढ़	–	१२ ब्रह्मचारियों को विधि-विधान का शिक्षण	
१०	अनवरत	टीकमगढ़	–	अनेकान्त शिक्षण एवं स्वाध्याय में श्रावकों एवं विद्यार्थियों को शिक्षण-प्रवचन	

'पुष्प' जी को इन आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिकाओं का आशीर्वाद एवं आयोजनों में सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ

(१) आचार्यश्री शिवसागर जी
(२) आचार्य श्री विमलसागर जी
(३) आचार्यश्री गणधराचार्य कुन्थुसागर जी
(४) आचार्यकल्पश्री श्रुतसागर जी
(५) आचार्यश्री सन्मतिसागर जी
(६) आचार्य श्री विद्यासागर जी
(७) आचार्यश्री कल्याणसागर जी
(८) आचार्यश्री विद्यानन्द जी
(९) आचार्यश्री विरागसागर जी
(१०) आचार्यश्री कनकनन्दि जी
(११) आचार्यश्री पद्मनन्दि जी
(१२) आचार्यश्री विद्याभूषण जी
(१३) आचार्यश्री आर्यनन्दि जी

(१) उपाध्याय मुनिश्री आनन्दसागर जी
(२) उपाध्याय मुनिश्री गुप्तिसागर जी
(३) उपाध्याय मुनिश्री कामकुमारनन्दि जी
(४) उपाध्याय मुनिश्री ज्ञानसागर जी
(५) उपाध्याय मुनिश्री श्रुतसागर जी
(६) उपाध्याय मुनिश्री नयनसागर जी

(१) मुनिश्री आदिसागर जी
(२) मुनिश्री अजितसागर जी
(३) मुनिश्री नेमिसागर जी
(४) मुनिश्री सम्मेदसागर जी
(५) मुनिश्री श्रुतसागर जी
(६) मुनिश्री योगसागर जी
(७) मुनिश्री सुधासागर जी
(८) मुनिश्री क्षमासागर जी
(९) मुनिश्री समतासागर जी
(१०) मुनिश्री प्रमाणसागर जी
(११) मुनिश्री पावनसागर जी
(१२) मुनिश्री मार्दवसागर जी
(१३) मुनिश्री सुदर्शनसागर जी
(१४) मुनिश्री नमिसागर जी
(१५) मुनिश्री कैलाशसागर जी
(१६) मुनिश्री निर्णयसागर जी
(१७) मुनिश्री विशुद्धसागर जी
(१८) मुनिश्री विश्वकीर्तिसागर जी

(१) आर्यिकाश्री ज्ञानमति माताजी
(२) आर्यिकाश्री अभयमति माताजी
(३) आर्यिकाश्री अजितमति माताजी
(४) आर्यिकाश्री बाहुबलि माताजी
(५) आर्यिकाश्री विशालमति माताजी
(६) आर्यिकाश्री गुरुमति माताजी
(७) आर्यिकाश्री दृढ़मति माताजी
(८) आर्यिकाश्री मृदुमति माताजी
(९) आर्यिकाश्री आदर्शमति माताजी
(१०) आर्यिकाश्री भरतमति माताजी
(११) आर्यिकाश्री सुप्रकाशमति माताजी
(१२) आर्यिकाश्री विद्याश्री माताजी
(१३) आर्यिकाश्री विधाश्री माताजी

(१) ऐलक श्री निशंक सागर जी
(२) ऐलक श्री निर्भयसागर जी
(३) ऐलक श्री सम्यक्त्वसागर जी
(४) ऐलक श्री विनम्रसागर जी
(५) क्षुल्लक श्री सिद्धसागर जी
(६) क्षुल्लक श्री सिद्धान्तसागर जी

'पुष्प' जी सन्तों की दृष्टि में

विपरीत परिस्थितियों में भी सहज रहकर कार्य करना 'पुष्प' जी की विशेषता है। गुरुओं की सेवा में विनत पुष्प जी रत्नत्रय प्राप्त कर अपना आत्मकल्याण करें।

मुनिश्री क्षमासागर

'पुष्प' जी ने शताधिक प्रतिष्ठाओं के अनुभव को प्रतिष्ठा रत्नाकर के माध्यम से उपलब्ध करके निःस्पृहता का उदाहरण प्रस्तुत किया है, जो अनुकरणीय है।

मुनिश्री सुधा सागर

'पुष्प' जी बुन्देलखण्ड के प्रतिष्ठाचार्य हैं, वह किसी प्रकार की शिथिलता स्वीकार नहीं करते हैं, उनकी विशुद्ध कार्य शैली ही उनके आयोजनों की सफलता का कारण है।

मुनिश्री समतासागर

'पुष्प' जी प्रतिष्ठाचार्यों के लिये आदर्श हैं, उनकी सामञ्जस्यपूर्ण एवं सैद्धान्तिक कार्यशैली के कारण सभी प्रतिष्ठाचार्य उनका साथ पाने को सौभाग्य मानते हैं।

मुनिश्री तरुण सागर

आगम, सिद्धान्त एवं विज्ञान का सामञ्जस्य 'पुष्प' जी की प्रतिष्ठा में देखने को मिलता है, आगम विशुद्ध प्रदर्शन के वह सख्त विरोधी है।

मुनिश्री प्रमाण सागर